



मिमान

अठारहवां संस्करण **2024**

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़-रायपुर

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़-रायपुर





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मितान

अटारहवां संस्करण 2024

हिन्दी वार्षिक पत्रिका



स्वत्वाधिकार एवं प्रकाशन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़-रायपुर
जीरो पार्ट, बलौदा बाजार रोड
पिन - 492005





वर्तमान समय जबकि संवेदनहीन होता जा रहा है, इस वजह से संपूर्ण मानवता पर एक अनजाना खतरा मंडराता दिखाई पड़ रहा है वही छत्तीसगढ़ क्षेत्र में आम नाते रिश्तेदारों से भी बढ़कर एक परंपरा आज भी अपने अस्तित्व को बनाए हुए हैं वह परंपरा है “मितान”।

“मितान” मूलतः छत्तीसगढ़ शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ मित्र अथवा दोस्त है छत्तीसगढ़ में मितान बढ़ने की प्रथा प्रचलित है इससे दो व्यक्ति एक दूसरे को जिंदगी भर मित्र मानने की प्रतिज्ञा लेते हैं। यह कार्यक्रम संपूर्ण ग्रामवासियों के समक्ष संपन्न होता है। मितान बढ़ने के बाद दोनों मित्रों का आपसी रिश्ता सगे रिश्ते से भी बढ़कर हो जाता है इसलिए दोनों परिवारों में विवाह जैसे संबंध नहीं होते। मानवीय रिश्तों की तरह यह रिश्ता अचल गहराई को नापते हुए मानवीय संबंधों को अटूट रखने की इस पवित्र परंपरा को सादर नमन करते हैं।

उद्देश्य

पत्रिका का मुख्य उद्देश्य हिंदी के प्रयोग पर संवर्धन और राजभाषा के प्रयोग संबंधी समस्याओं के निवारण तथा गरिमामयी हिंदी सृजन का समयानुकूल प्रकाशन है। पत्रिका का उद्देश्य यह भी है कि कार्यालयीन गतिविधियों की समायोजित जानकारी उपलब्ध कराई जाए और शासकीय कार्य में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया जाए।





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मितान परिवार

संरक्षक एवं अध्यक्ष

श्री यशवंत कुमार

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

परामर्शदात्री समिति

सुश्री प्रियाति कौड़ो

वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन एवं ए.एम.जी. II)

श्री विलास यू. पाटिल

उप महालेखाकार
(प्रशासन, लेखा एवं वी.एल.सी.)

श्री नितीन गंगाधर पुके

उप महालेखाकार
(ए.एम.जी. I)

सुश्री जी. एजिलरसी

उप महालेखाकार
(निधि एवं पेंशन)

संपादक मंडल

सुश्री सजनी एस. अब्राहम

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सुश्री दिव्या साहू

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री एन. के. बिस्वाल

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री यशवंत वर्मा

हिंदी अधिकारी

सुश्री संगीता साटकर

पर्यवेक्षक

श्री शिव शंकर गोरे

कनिष्ठ अनुवादक

श्री सौरिश राय

कनिष्ठ अनुवादक

श्री बिपुल कुमार साव

कनिष्ठ अनुवादक

श्री बिमल भारती

लेखापरीक्षक





वर्ष 2024 गणतंत्र दिवस का भव्य एवं आकर्षक आयोजन





संदेश



राजभाषा हिंदी को समर्पित पत्रिका 'मितान' का 18 वां संस्करण प्रकाशित करते हुए मुझे हार्दिक उत्साह की अनुभूति हो रही है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग हमारी राष्ट्रीय पहचान और हमारी ऐतिहासिक संस्कृति का अभिन्न अंग है। हिंदी भाषा न केवल हमारे संचार का माध्यम है, बल्कि यह हमारे देश की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता और अखंडता का प्रतीक है। यह हमारी कार्यकुशलता और आपसी संवाद को भी सुदृढ़ करती है।

हमारे कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार और उपयोग को बढ़ावा देने के लिए हम सभी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह हमारा दायित्व है कि हम अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिकतम प्रयोग करें और इसे प्रशासनिक कार्यों में एक मजबूत स्तंभ के रूप में स्थापित कर अपने कार्यों का अभिन्न हिस्सा बनाएं। इससे न केवल हमारी कार्यशैली में सुधार होगा, बल्कि हम अपनी राजभाषा के प्रति सम्मान भी प्रकट करेंगे।

हमें गर्व है कि हिंदी देश की सांस्कृतिक विविधता और गौरव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, यह भाषा न केवल हमारी संवाद की धारा को संचालित करती है, बल्कि हमारे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं है, यह हमारी सभ्यता, संस्कृति और पहचान का माध्यम है। हिंदी में साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को भी बढ़ावा देना चाहिए ताकि लोग हिंदी भाषा के सौंदर्य और इसके समृद्ध साहित्य से परिचित हो सकें।

हमारे इस प्रयास में आपके द्वारा दी जा रही प्रतिबद्धता और योगदान के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मेरी शुभकामनाएं हैं कि 'मितान' पत्रिका का प्रकाशन हमेशा उत्साह एवं उमंग के साथ प्रगति पथ पर अनवरत चलता रहे और हिंदी को एक सशक्त राजभाषा के रूप में स्थापित कर अपने कार्यक्षेत्र का अभिन्न अंग बनाएं।

धन्यवाद...

य. कुमार

यशवंत कुमार

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा एवं लेखा हकदारी)

छत्तीसगढ़, रायपुर





स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर भव्य समारोह





संपादकीय



भारत अनेकता में एकता एवं अनेक समृद्ध भाषाओं वाला देश है, परन्तु राजभाषा हिंदी, सभी भाषा-भाषियों, जनता और सरकार के बीच एक संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती है। भाषा की लोकप्रियता व सम्मान उसके निरंतर प्रयोग से बढ़ता है। राष्ट्रीयता का बोध कराने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जिसके द्वारा हम अपने विचार, भाव एवं ज्ञान को व्यक्त करते हैं।

भाषा का महत्त्व केवल संवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है। हिंदी भाषा की सुन्दरता उसके साहित्य और कविताओं में झलकती है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए संजीवनी देती है।

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'मितान' का 18वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका का मुख्य उद्देश्य कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी द्वारा कार्यालयीन कार्य में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करना एवं हिंदी भाषा के महत्त्व को पुनर्जीवित करना है। इस अंक में कार्यालय के कर्मिकों द्वारा रोचक लेख, कविताओं और कहानियों को शामिल किया गया है जो आपका न केवल मनोरंजन करेगी, बल्कि आपको सोचने पर भी मजबूर करेगी। हमारा यह प्रयास तभी सफल होगा जब आप सभी पाठकगण इसमें सक्रीय रूप से भाग लेंगे और अपने सुझाव व प्रतिक्रियाएं हमें भेजते रहेंगे ताकि पत्रिका को और सुन्दर एवं बेहतर बनाया जा सके।

'मितान' पत्रिका के संपादन हेतु सक्रिय योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं अधिकारियों को संरक्षक, परामर्शदाता एवं संपादन मंडल की ओर से धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित !

संपादक
सजनी एस. अब्राहम
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



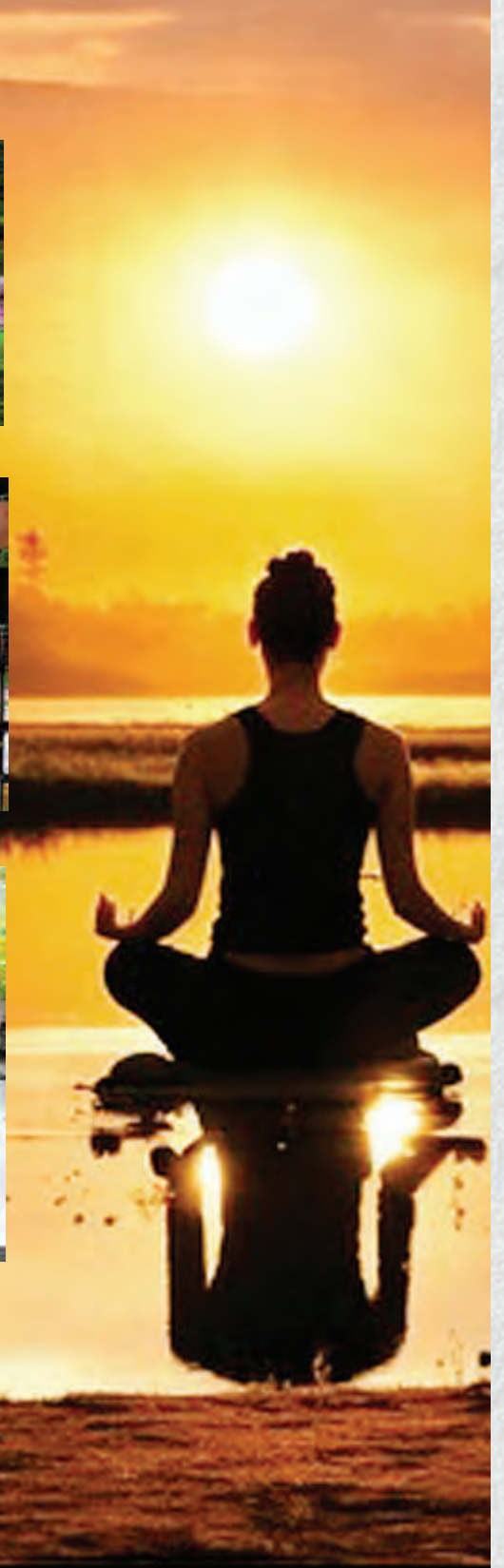


लेखापरीक्षा सप्ताह - वर्ष 2023





योग दिवस - 21 जून वर्ष 2024





मिमान 2024
अठारहवां संस्करण

हिंदी कार्यशाला - वर्ष 2024



मुंशी प्रेमचंद जी की जयंती समारोह



ईदगाह सी लिखी कहानी और गबन गोदान,
दर्द लिखा है निर्धन जन का लेखक हुए महान।
प्रेमचंद की सभी कथाएं सुनी पढ़ी जाती हैं,
बूढ़ी काकी कफ़न कामना सबको ही भाती हैं।
नशा स्वामिनी इस्तीफा भी हैं पुस्तक की शान,
दर्द लिखा है निर्धन जन का लेखक हुए महान।
मंदिर मस्जिद मंत्र आभूषण लिखा ईश्वरीय न्याय,
अलगोड़ा ज्योति लिखी और गरीब की हाय।
हाय निर्मला की संकट में फंसी रही है जान,
दर्द लिखा है निर्धन जन का लेखक हुए महान।
हलकू होरी धनिया जबरा और आत्माराम,
हामिद और अमीना सब ही करें प्रेम से काम।
बड़े भाई साहब तो देखो हैं भाई के प्राण,
दर्द लिखा है निर्धन जन का लेखक हुए महान।
मुंशी प्रेमचंद का सचमुच वृहद कथा संसार,
सुने पढ़े जाएंगे जब तक है गंगा में धार।
शब्द शब्द में प्रेमचंद हैं यही हमें है भान,
दर्द लिखा है निर्धन जन का लेखक हुए महान।

मुंशी प्रेमचंद का जीवन परिचय

हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार प्रेमचंद का जन्म वाराणसी के निकट लमही नामक गाँव में सन् 1880 में हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा गाँव में हुई। छुटपन में ही उनके पिता का देहांत हो गया। इसलिए घर की जिम्मेदारी असमय ही उनके कंधों पर आ पड़ी। वे दसवीं पास करके प्राइमरी स्कूल में शिक्षक बन गए। नौकरी में रहकर ही उन्होंने बी.ए. पास किया। इसके बाद वे शिक्षा विभाग में सबडिप्टी-इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स के रूप में नियुक्त हो गए। सन् 1920 में वे गाँधी जी के आह्वान पर असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। उन्होंने साहित्य-लेखन द्वारा देशसेवा करने का संकल्प किया। उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। पहले वे नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखते थे। बाद में हिंदी में प्रेमचंद के नाम से लिखने लगे। उन्होंने अपना छापाखाना खोला तथा 'हंस' नामक पत्रिका का संपादन किया। सन् 1936 में उनका देहांत हो गया।





श्री तादुरी सुधींद्रा, स.ले.प.अ को छत्तीसगढ़ राज्य क्रिकेट संघ के अंडर 19 के मुख्य कोच के रूप में उनके टीम द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उन्हें प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

श्री तेलगु वेंकटेश

- 41st अखिल भारतीय के.डी. सिंह बाबू हॉकी टूर्नामेंट - विजेता, आयोजित - लखनऊ, टीम - सीएजी
- 40th भारतीय ओडलु सुरजीत सिंह हॉकी टूर्नामेंट - रनर-अप, आयोजित - जालंधर, पंजाब, टीम - सीएजी



दक्षिण-पूर्व मध्य रेलवे खेल संघ के द्वारा आयोजित दो दिवसीय प्रथम अंतर संस्थागत शतरंज प्रतियोगिता के व्यक्तिगत इवेंट में प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) कार्यालय के श्री योगेश पाण्डेय, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने द्वितीय स्थान, श्री दीपक राजपूत, सहायक पर्यवेक्षक ने तृतीय स्थान, श्री सौरभ कुमार, लेखापरीक्षक ने छठवां स्थान एवं श्री संतोष कुमार, लेखापरीक्षक ने सातवां स्थान सुनिश्चित किया एवं टीम इवेंट में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।



क्रिकेट टूर्नामेंट (ऑडिट इंडिपेंडेंस कप) की विजेता टीम-एकाउंट्स लेजेण्ड्स

क्रिकेट टूर्नामेंट (ऑडिट इंडिपेंडेंस कप) की उपविजेता टीम-एकाउंट्स वारियर्स





श्री ए. संतोष, वरिष्ठ लेखापरीक्षक को वर्ष 2023 अक्टूबर में आयोजित स्पेनिश टेबल टेनिस लीग में टॉप 5 में अपनी जगह बनाकर देश का नाम रौशन करने पर छ.ग. के माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी द्वारा पंकज विक्रम अवार्ड से सम्मानित किया गया एवं कार्यालय के प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय द्वारा भी इस उपलब्धी हेतु सम्मानित किया गया।



22 वीं योनेक्स सनराईज राज्य स्तरीय बैडमिंटन प्रतियोगिता में (13 वर्ष आयु वर्ग में एकल एवं युगल स्पर्धा में) श्री हिरेन्द्र अग्रवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक के सुपुत्र मास्टर उत्सव अग्रवाल विजेता रहे।





कैरम टूर्नामेंट वर्ष 2024 के महिला डबल की विजेता सुश्री कविता विनय, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, सुश्री अपूर्वा श्री, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी एवं उपविजेता सुश्री सुमंगली तंबी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, सुश्री आभा रानी, पर्यवेक्षक



कैरम टूर्नामेंट वर्ष 2024 के पुरुष डबल के विजेता श्री जितेंद्र नयन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी एवं श्री अमित कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी।



कैरम टूर्नामेंट वर्ष 2024 के वेटेरन डबल (Veteran Double) के विजेता श्री एस. के. साहू, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं श्री हेमराज बावने, सहायक पर्यवेक्षक



कैरम टूर्नामेंट वर्ष 2024 के वेटेरन डबल के उपविजेता श्री सोभित राम बंजारे, लेखापरीक्षा एवं श्री किशोर हेडाऊ, सहायक पर्यवेक्षक



कैरम टूर्नामेंट वर्ष 2024 के पुरुष डबल के उपविजेता श्री रजनीकांत सिन्हा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी एवं श्री राहुल दास, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी





शतरंज टूर्नामेंट वर्ष
2024 मेन्स के
विजेता श्री अम्बर
कुमार कुंदन,
सहायक लेखापरीक्षा
अधिकारी एवं उप
विजेता श्री योगेश
पाण्डेय, सहायक
लेखापरीक्षा अधिकारी
एवं वेटेनस में श्री
ई.टी. मनोज विजेता
एवं श्री जी. हरिश उप
विजेता रहे।

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग, पश्चिम क्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता वर्ष -2023 दिनांक 08 जनवरी 2024 से 11 जनवरी 2024





अकाउंट प्रतियोगिता

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) द्वारा आयोजित 8 मार्च 2024
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की झलकियां

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) के मनोरंजन क्लब द्वारा
आयोजित प्रतियोगिता विजेताओं को पुरस्कृत किया गया



बैडमिंटन प्रतियोगिता वर्ष -2024



मास्टर सुशांत उडके सुपुत्र श्री युवराज सिंह उडके वरिष्ठ निजी सचिव, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) ने छत्तीसगढ़ बैडमिंटन एसोसिएशन द्वारा रायपुर में आयोजित स्टेट लेवल बैडमिंटन प्रतियोगिता - 2024 (अंडर- 15 डबल) में भाग लेते हुए सिल्वर मेडल प्राप्त किया।



मास्टर सुशांत उडके सुपुत्र श्री युवराज सिंह उडके वरिष्ठ निजी सचिव, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) ने स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित स्टेट लेवल स्कूल गेम्स (बैडमिंटन अंडर - 19 सिंगल) में ब्रांज मेडल प्राप्त कर नेशनल के लिए चुने गए



छत्तीसगढ़ के बैडमिंटन खिलाड़ी मनीष गुप्ता और पंकज नत्थानी की जोड़ी ने इंडियन मास्टर्स चैम्पियनशिप में सिल्वर मेडल जीता।



इंडियन मास्टर्स बैडमिंटन में मनीष-पंकज की जोड़ी ने जीता सिल्वर मेडल
रायपुर, छत्तीसगढ़ के बैडमिंटन खिलाड़ी मनीष गुप्ता और पंकज नत्थानी की जोड़ी ने इंडियन मास्टर्स चैम्पियनशिप में सिल्वर मेडल जीता। पंचकुला में 23 मार्च तक आयोजित टूर्नामेंट में गुप्ता को हुए 35 वर्ष आयु वर्ग के पुरुष डबल्स के फाइनल में पंकज-मनीष का मुकाबला पुरुषों के युवराज-सुब्रह्मण्यम की जोड़ी से हुआ। जिसमें पुरुषों के खिलाड़ियों ने 21-12, 21-13 से जीत हासिल कर खिताब पर कब्जा जमाया। इसके पहले मनीष-पंकज की जोड़ी ने पंजाब के मयंक-अनुज को 21-14, 21-16 हराकर फाइनल में प्रवेश किया था। मनीष गुप्ता राज्य में रायपुर जिला बैडमिंटन संघ का प्रतिनिधित्व करते हैं।

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिसके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

- मैथिलीशरण गुप्त





मितान 2024
अठारहवां संस्करण



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest





स.क्र.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ नं.
1	किराए का घर या अपना घर	कुमार अर्जुन	1-1
2	कलम	मेंडके मनोज रविन्द्र	2-2
3	नई पोस्टिंग	रोहित शर्मा	2-2
4	नींद हमारी पिया किसने उड़ाई	ऋषभ जैन	3-3
5	जीवन की परीक्षा	राजेश कुमार वर्मा	4-4
6	मन की हलचल	रणविजय	4-4
7	नन्ही किरण	मोहम्मद जफ़र	5-5
8	नारी ममता की अविरल धार	संगीता साटकर	6-6
9	अकाल मृत्यु	राय चौधरी बस्तरिया	6-6
10	प्यार की तलाश	रणविजय	7-7
11	शब्दों का मान	मेंडके मनोज रविन्द्र	7-7
12	क्या टेस्ट क्रिकेट आज के आधुनिक युग में दम तोड़ रहा है	कुमार अर्जुन	8-8
13	समंदर का पानी	सचिन	9-9
14	गृह निवास	शिव शंकर गोरे	9-9
15	माँ	प्रमिला बाघ	10-10
16	कड़वे शब्द	मेंडके मनोज रविन्द्र	10-10
17	स्कूल के वो दिन	रोहित शर्मा	11-11
18	बैड बैंक (Bad Bank)	शिव शंकर गोरे	12-12
19	“रहस्य भरा बाल गीत”	राजेश कुमार वर्मा	13-13
20	परिचय - विश्व विजेता 2024	मनोज कुमार देवांगन	14-14
21	हार्ड वर्क और स्मार्ट वर्क का खेल निराला	कुमार अर्जुन	15-15
22	मैं और मेरी क्रिकेट	सी. कमलेश राव	17-17
23	महुआ रानी	रणविजय	18-18
24	सेवा पुस्तिका	मेंडके मनोज रविन्द्र	18-18





25	हार न मानना	सौरिश राय	19-19
26	हरियाली-अत्यंत आवश्यक	यशेन्द्र गुप्ता	19-19
27	जिंदगी की पूंजी	गोपाल राव लिमजे	20-20
28	भारतीय ऑडिट और अकाउंट	प्रोसेनजित दास	20-20
29	सेवानिवृत्ति विदाई : एक कार्यालय अध्यक्ष की...	यशवंत वर्मा	21-21
30	दृश्यमान दुनिया सच या भ्रम?	सौरिश राय	22-22
31	हादसा-बहुत दुखदाई किन्तु देता है सीख	यशेन्द्र गुप्ता	23-23
32	आदत	हरेन्द्र कुमार पटनायक	23-23
33	जरूरी है...	मोहम्मदजफ़र	24-24
34	कहीं ना मिला गाँव	सचिन	24-24
35	बेगुनाह की सोच	अरविन्द कुमार	25-25
36	समय और सीमा के साथ व्यवहार	यशेन्द्र गुप्ता	26-27
37	प्रौद्योगिकी पर अति- निर्भरता	सौरिश राय	28-28
38	जिंदगी	अजय मीणा	29-29
39	कुदरत	श्रीमती लेखा उदयन	29-29
40	अनुभव कहता है...	मोहम्मद जफ़र	30-31
41	धर्म का बदलता स्वरुप	यशवंत वर्मा	32-32
42	कड़वी सच्चाईयाँ	हरेन्द्र कुमार पटनायक	33-33
43	प्रकृति को यूं ही रहने दो	एन. के. बिस्वाल	34-34
44	कार्यालय में नवनियुक्त कर्मचारियों / अधिकारियों की सूची	-	35-37
45	कार्यालय में पदोन्नत कर्मचारियों / अधिकारियों की सूची	-	37-38
46	दिनांक 01.08.2023 से 31.07.2024 तक कार्यालय में पदोन्नति की विवरण	-	38-40
47	दिनांक 01.08.2023 से 31.07.2024 तक कार्यालय में सेवानिवृत्ति की विवरण	-	40-40
48	दिनांक 01.08.2023 से 31.07.2024 तक कार्यालय में मृत्यु की विवरण	-	40-40



किराए का घर या अपना घर

आम आदमी की ज़िंदगी में घर एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। घर की खरीददारी या किराए पर घर लेना, दोनों ही बड़े वित्तीय फैसले हैं। यह सवाल कि किराए का घर या अपना घर, लंबे समय में कौन सा बेहतर है। काफी सोचने वाला है। आइए, इस विषय पर विस्तार से विचार करते हैं।

1. वित्तीय दृष्टिकोण से तुलना

किराए का घर-

किराए का घर लेने पर आप महीने का किराया देते हैं, जो कि निश्चित रूप से आपकी मासिक व्यय का एक हिस्सा बन जाता है। किराए पर रहने का एक फायदा यह है कि आप कोई बड़ी राशि एक साथ नहीं लगाते और आपको घर की देखभाल और मरम्मत के लिए जिम्मेदार नहीं होना पड़ता। हालांकि, लंबी अवधि में यह भी सत्य है कि किराए पर रहना आपके पैसे का निवेश नहीं बनता आप अपनी मासिक किराओं से कोई संपत्ति नहीं बना रहे हैं।

अपना घर-

अपने घर की खरीददारी एक बड़ी वित्तीय प्रतिबद्धता होती है, लेकिन यह लंबी अवधि में एक अच्छा निवेश हो सकता है। एक बार जब आपने अपनी होम लोन की किराओं चुका दीं, तो आपके पास एक संपत्ति होगी जिसे आप बेच सकते हैं या उसे अपना बना सकते हैं। इसके अलावा, अपने घर में रहने पर आप अपनी संपत्ति की वैल्यू बढ़ाने के लिए भी काम कर सकते हैं, जो कि एक अच्छा निवेश साबित हो सकता है।

2. जीवनशैली और स्थिरता

किराए का घर-

किराए का घर, रहने वाले लोगों के लिए अधिक लचीलापन और कम स्थिरता का प्रतीक हो सकता है। जब आप किराए पर रहते हैं, तो आप स्थान बदलने के लिए स्वतंत्र होते हैं, यदि आपकी नौकरी या व्यक्तिगत स्थिति बदलती है। हालांकि, इस लचीलापन का मतलब यह है कि आपको कभी भी अपनी जगह छोड़ने की संभावना रहती है, जो कि स्थिरता के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता।

अपना घर-

अपने घर के मालिक होने पर स्थिरता की भावना होती है। आप अपने घर को अपनी पसंद के अनुसार सजाने और बदलने में पूरी स्वतंत्रता रखते हैं। इसके अलावा, अपने घर की मरम्मत और देखभाल पर आप पूरी तरह से नियंत्रण में होते हैं। यह स्थिरता परिवार के लिए एक सुरक्षित और आरामदायक वातावरण प्रदान करती है।

3. दीर्घकालिक संपत्ति निर्माण

किराए का घर-

किराए पर रहने से आपकी संपत्ति में कोई वृद्धि नहीं होती। आपके किराए



का पैसा किसी अन्य व्यक्ति की संपत्ति की ओर जाता है और आपकी अपनी संपत्ति का कोई योगदान नहीं होता। इसलिए, यह दीर्घकालिक संपत्ति निर्माण के दृष्टिकोण से अनुकूल नहीं होता।

अपना घर-

अपना घर खरीदने से आप लंबे समय में संपत्ति का निर्माण करते हैं। जैसे-जैसे समय बितता है, आपकी संपत्ति की मूल्यवृद्धि होती है, और आप एक बड़ा वित्तीय लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा, आपके द्वारा किए गए किसी भी सुधार या नवीनीकरण से संपत्ति की कीमत और बढ़ सकती है।

निष्कर्ष-

किराए का घर और अपना घर दोनों के अपने-अपने लाभ और सीमाएँ हैं। किराए का घर लचीलापन और कम वित्तीय दबाव प्रदान करता है, जबकि अपना घर स्थिरता, संपत्ति निर्माण और लंबे समय में वित्तीय लाभ का अवसर देता है। यदि आप वित्तीय स्थिरता, संपत्ति निर्माण और दीर्घकालिक निवेश की सोच रखते हैं, तो अपना घर खरीदना अधिक लाभकारी हो सकता है। हालांकि, आपकी व्यक्तिगत परिस्थितियाँ और प्राथमिकताएँ भी इस निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं।



कुमार अर्जुन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



कलम

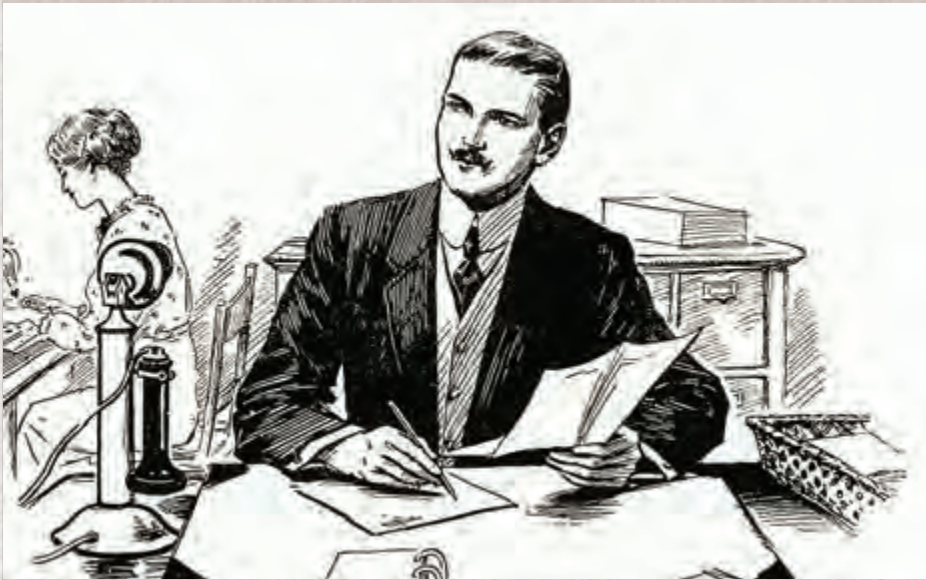


मैं टाइप करने लगता हूँ कंप्यूटर पर,
ई ऑफिस में...।
कंडिका,
शासकीय पत्र,
मासिक प्रतिवेदन,
घटना प्रतिवेदन,
और
हिंदी तिमाही प्रतिवेदन...
अचानक मेरे हाथ रुकते हैं... !

अपनी कलम की याद में...।
खोजता हूँ उसे,
मिल जाती है मेरे दर्राज के कोने में पड़ी हुई...।
क्या करे वह भी... !
अब सब काम डिजिटल जो हो गया है
अब कंप्यूटर पर ही उंगलियां लिखती है...।
तो, कलम की याद कम ही आती है...।
लेकिन,
बहुत दिन बाद...
कुछ ऐसा काम मिलता है।
नोट शीट पर लिखने वाला...।
सेवा पुस्तिका में,
वेतन निर्धारण के सत्यापन का।

उसमे नीली काली लिखावटे...
तारीखें एवं आंकड़ों का खेल
और कुछ कुछ जगह,
लाल अक्षरों की करवटे।
अब
मन को थोड़ा समाधान मिला है...
कलम से फिर से नाता जुड़ने का।
और अब मैं फिर से कलम चलाने लग जाता हूँ।

मेंडके मनोज रविन्द्र
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



नई पोस्टिंग

जब जब होती नई पोस्टिंग,
मेरा दिल डर जाता है।
कि अब!
नई जगह जाना होगा,
नया घर तलाशना होगा
अजनबीयों से रिश्ते बनाना होगा,
न चाहते हुये भी मुस्कराना होगा।

अतः
जब जब होती नई पोस्टिंग,
मेरा दिल डर जाता है।
कि अब!
नई जगह होगी
नया काम होगा,
नया बॉस होगा,
नया नाम होगा
जितना प्यार व पहचान यहाँ मिली,
उसके खातिर,

नई जिम्मेदारियाँ निभाना होगा।
अतः
जब जब होती नई पोस्टिंग,
मेरा दिल डर जाता है।
कि अब!
नया स्कूल, नया डॉक्टर, नया दूधवाला,
सब तलाशना होगा,
नये दोस्त बनेंगे,
नये सहकर्मी होंगे,
लेकिन पुरानों को मुश्किल भूलाना होगा।
अतः
जब जब होती नई पोस्टिंग,
मेरा दिल डर जाता है।
लेकिन अब!
डर से निकलकर नई जगह जाना होगा,
नई पोस्टिंग के डर को मिटाना होगा।
नई पहचान, नये अनुभव को पाना होगा,
नई जिंदगी की ओर कदम बढ़ाना होगा।
अतः
अब नई पोस्टिंग पर जाना होगा,
दिल के डर को भगाना होगा।

रोहित शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी





नींद हमारी पिया किसने उड़ाई

आज का इंसान बस दो ही चीजों के लिए व्याकुल नजर आता है। पहला धन और दूसरी नींद। नींद का आना धन के पाने से भी अधिक कठिन हो गया है आजकल। धन तो धन की देवी यानी लक्ष्मी जी को प्रसन्न करके प्राप्त किया जा सकता है। नींद वाली देवी जी का तो अता-पता भी नहीं मिलता।

कहानियों -उपन्यासों में जरूर पढ़ने में आता है कि फलां-फलां व्यक्ति निद्रा देवी के आगोश में समा गया। यह लेखक की कल्पना मात्र है। लेखकों की इस तरह की गप्पों के कारण कुछ पुस्तकों को फिक्शन की श्रेणी में रखना पड़ता होगा। यदि सचमुच की कोई निद्रा देवी होती तो आज सबसे ज्यादा भीड़ उन्हीं के मंदिर में नजर आती। लोग हफ्तों रतजगा कर उन्हें प्रसन्न करने में लगे रहते। आज अनिद्रा का बोलबाला इतना है कि यदि कोई बाबा निद्रादेवी की खोज कर ले तो उसपर धन की देवी की कृपा बरसना सुनिश्चित है। नींद और धन के संबंध होने के बहुतेरे प्रमाण मिलते हैं। जैसे नींद प्रायः रात के समय आती है और यही धन की देवी के वाहन अर्थात उल्लू के विचरण का समय भी है। नींद का मारा व्यक्ति कहता फिरता है कि रात भर उल्लू की तरह जागता रहता हूं।

कहा जाता है कि लक्ष्मी के पीछे भागो तो लक्ष्मी हाथ नहीं आती। नींद के पीछे भी "नहीं आ रही, नहीं आ रही" सोचते रहो तो वो भी बिल्कुल नहीं आती। "मजदूर कभी नींद की गोली नहीं लेते" टाइप के शेर नींद और धन वालों के बीच

के छत्तीस के आंकड़े की पुष्टि करते हैं। हालांकि मजदूरों द्वारा नींद की गोली न लेने का कारण दूसरा भी हो सकता है। दवाओं की कीमतें मजदूर की पहुंच में हैं ही नहीं। नींद की गोली हासिल करने के लिए तो डॉक्टर पर भी जेब ढीली करनी पड़ती है, क्योंकि सरकार ने नियम बनाया है सो ये बिन डॉक्टरी पर्चों के मिलती ही नहीं। आधुनिक सरकारें न केवल मजदूरों बल्कि धनाढ्य लोगों नींद की भी दुश्मन हैं। वे नाना प्रकार की एजेंसियों को सक्रिय रखकर उनकी नींद उड़ाये रहती हैं। प्राचीन काल में अच्छी नींद प्राप्त करने का छोड़े बेचने के तरीका खासा चलन में था। अब यदि कोई छोड़े का विक्रय करें तो जीएसटी चुकाने और उसके चारे के इनपुट क्रेडिट करने के चक्कर में रही सही नींद भी उड़ जाने का खतरा होता है। मोटर गाड़ियों के चलन के बाद लोगों ने छोड़े रखना बंद कर दिया है।

फलस्वरूप इन्हें बेचने के अवसरों में भी कमी आयी है। आधुनिक काल में नींद की कमी होने का यह एक प्रमुख कारण है। आजकल छोड़े भले ही न बिकते हों पर हास अवश्य ट्रेड होते हैं। हास ट्रेडिंग की प्रक्रिया के परिणाम छोड़े बेचने से विपरीत होते हैं अर्थात जिसके हास बिक जायें उसकी नींद गायब हो जाती है। वर्तमान में नींद की कमी के और भी कारण हो सकते हैं। पहले किताबें पढ़ने का चलन था। कहा जाता था कि सोते समय पढ़ने से अच्छी नींद आ जाती है। आजकल किताबों का स्थान रीलों ने ले लिया है।

शैश्या में इनके दर्शन करने से लोगों की रही-सही नींद भी उड़ जाती है। कुछ लोग कहते हैं कि पहले बहुत बोर साहित्य लिखा जाता था

फलस्वरूप इसके पठन से नींद उपलब्ध हो जाती थी। यह गलत तर्क है। लोग सो इसलिए जाते थे क्योंकि वे उसे पढ़ पाते थे। आधुनिक काल की रचनाओं का एक पैराग्राफ भी पढ़ा जा सका तो नींद तो छोड़िए कोमा की स्थिति तक हासिल की जा सकती है। नयी रचनाएं भयंकर कड़वी गोली के माफिक हैं, जिसे जीभ पर रखना ही असंभव हो। जो लोग मेरे लेख की तारीफ करते हैं मैं उनसे कभी नहीं पूछता कि उसमें क्या अच्छा लगा। पूरी आशंका है कि वे ये कह दें कि इसे पढ़कर नींद बेहतर आ जाती है।

इंसान को धन की कमी के बनिस्पत नींद की कमी अधिक परेशान करती है। पड़ोसी के घर धन वृष्टि के फलस्वरूप आप मुंह भले लटका लें, पर उसका धन उड़ाने नहीं पहुंच जाते। आपकी व्याकुलता तो तब देखने में आती है, जब बगल वाला गहरी नींद में हो और आपको नींद न आ रही हो। ऐसे दुखदायी अवसर में लोग पड़ोसी तो दूर, अर्धांगिनी की नींद से छेड़खानी का दुस्साहस तक कर डालते हैं। इसके लिए बार-बार लाइट जलाने और बाथरूम गमन करने से लेकर "सो गयीं क्या" पूछने तक की हिम्मत रखने वाले पति देखे गये हैं। स्वाभाविक रूप से पत्नियां उनकी इन गुस्ताखियों से कुपित होती हैं। अकेले उल्लू बने रहने का दर्द पत्नी की डांट से भी बड़ा होता है। हालांकि हमें लगता है कि ऐसे दुस्साहस वे बंद कर पाते हैं जिनकी पत्नियां कभी "नींद हमारी पिया तूने उड़ाई" गाते हुए नृत्य करती नजर आती थीं।

नींद लाने के अनेक उपाय बताए जाते हैं। कहते हैं भेड़ गिनने से नींद आ जाती है। हम यह तरीका इस्तेमाल ही नहीं कर पाते क्योंकि हमारे क्षेत्र में भेड़ें नहीं होतीं। भेड़ की याद करो तो मन में बकरी का चित्र बनता है। बकरी के गिनने से नींद आने का कभी सुना नहीं सो कौन गिने फ़ालतू में। संभवतः पहाड़ी लोग इस उपाय से सो पाते होंगे। बट्टी भाई बताते हैं कि भेड़ें गिनने से नींद भाग जाती है और भूख भी लगने लगती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जो पिछले जन्म में भेड़िया रहा हो उसके लिए भेड़ गिनने वाला तरीका कारगर नहीं है। नींद लाने के और तरीकों का जिक्र करना निरर्थक है क्योंकि जो पढ़ रहे होंगे वो इतना पढ़ते-पढ़ते निद्रा देवी के आगोश में चले गये होंगे और जो एक दो लाइनों बाद ही बोगस घोषित कर रील देखने में लग गये होंगे उनके लिए तो क्या ही लिखना आगे।

सो शुभ निद्रा!.....



ऋषभ जैन
व्यंग्यकार / वरिष्ठ
सामाजिक लेखाधिकारी लो.नि.वि.



जीवन की परीक्षा



राजेश कुमार वर्मा
सहायक परीक्षक



बारिश का मौसम भी शुरू हो चुका था, कभी रिमझिम तो कभी तेज बारिश होती। दीपू का स्कूल उसके घर से वाकिंग डिस्टेंस पर था, वह रोज पैदल ही स्कूल जाता था। स्कूल के रास्ते में खूब हरे-भरे पेड़-पौधे दिखते उसे बहुत अच्छा लगता था।

एक दिन दीपू स्कूल के लिए निकला तो बारिश होने लगी, वह छतरी खोलकर स्कूल की ओर बढ़ गया। उस दिन स्कूल में उसका मैथ्स का मंथली टेस्ट था, मैथ्स दीपू का फेवरेट सब्जेक्ट है, हर बार उसे क्लास में सबसे ज्यादा मार्क्स मिलते हैं। शिक्षक उसे खूब शाबाशी देते हैं क्लास के बच्चे भी दीपू के लिए क्लैपिंग करते हैं।

इस बार भी टेस्ट में अच्छा परफॉर्म करूंगा तो फिर से मुझे सबसे ज्यादा मार्क्स मिलेंगे। रास्ते में यही सोचता हुआ दीपू स्कूल जा रहा था तभी उसकी नजर एक बूढ़ी माँ पर पड़ी, वो बारिश में भीगती हुई आ रही थी। उनके हाथ में एक बड़ा सा थैला था, जिसे वह मुश्किल से उठा पा रही थी। दीपू छतरी लगाए उनके पास पहुंचा ही था कि वह बूढ़ी माँ बोली बेटा क्या तुम मुझे मेरे घर तक छोड़ दोगे? यह थैला बहुत भारी है, मैं बारिश में बुरी तरह भीग गई हूँ। दीपू ने तुरंत बूढ़ी माँ से पूछा कहाँ है आपका घर? पुष्प वाटिका के पास

अहिंसा मार्ग पर उन्होंने बताया।

अच्छा यह थैला आप मुझे पकड़ा दीजिए और मेरी छतरी के नीचे आ जाइए। दीपू ने अपना छतरी वाला हाथ बूढ़ी माँ की तरफ बढ़ा दिया, वह दीपू के छतरी के नीचे आ गई। दोनों अहिंसा मार्ग की ओर चल पड़े, हालांकि अहिंसा मार्ग ज्यादा दूर नहीं था, लेकिन बूढ़ी माँ बहुत धीरे-धीरे चल रही थीं उस पर से बारिश भी हो रही थी। इस कारण देर हो रही थी। तुम्हारा नाम क्या है बेटा? चलते-चलते बूढ़ी माँ ने पूछा, दीपू नाम है मेरा।

अच्छा तुम किस स्कूल में पढ़ते हो? बूढ़ी माँ ने अगला सवाल किया दीपू ने बताया विद्या भारती स्कूल में पढ़ता हूँ। थोड़ी देर बाद अहिंसा मार्ग आ गया बूढ़ी माँ को उनके घर पहुंचा कर दीपू तेजी से स्कूल की तरफ दौड़ा। उसे काफी देर हो चुकी थी। दीपू को मन ही मन देर से पहुंचने पर स्कूल गेट बंद होने और अपना टेस्ट छूट जाने की चिंता हो रही थी इसी चिंता में स्कूल की ओर भागने में उसका पैर एक गड्ढा में पड़ गया। गड्ढा बारिश के पानी से भरा हुआ था वह छपाक से उसमें गिर पड़ा, उसकी छतरी दूर जाकर गिरी पूरी ड्रेस कीचड़ से गंदा हो गई जूते-मोजे गीले हो गए। इस हालत में अब स्कूल जाना संभव ना था, वह

वापस घर लौट आया।

दीपू की इस हालत को देखकर उसकी माँ घबरा गई यह क्या हुआ बेटा? कीचड़ में कैसे सन गए, लगता है कहीं गिर गए थे? दीपू ने माँ को पूरी बात बताई, उसे टेस्ट ना दे पाने के कारण दुख हो रहा था वह रोते हुए बोला माँ मेरा टेस्ट छूट गया। माँ प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरकर बोली कोई बात नहीं बेटा तुमने किसी की मदद करके एक बहुत अच्छा काम किया है। तुम टेस्ट छूटने की ज्यादा चिंता मत करो अगला टेस्ट अच्छे से देना।

माँ की बात सुनकर दीपू का मन थोड़ा हल्का हो गया अगले दिन जब दीपू अपनी क्लास में पहुंचा तो सारे बच्चे खड़े होकर क्लैपिंग करने लगे, दीपू को समझ में नहीं आया कि उसके आते सभी ताली क्यों बजा रहे हैं? वह तो कल मैथ्स का टेस्ट भी नहीं दे पाया था।

तभी निकिता मैम ने उसे अपने पास बुलाया और बोली दीपू तुम स्कूल के परीक्षा में तो हमेशा फर्स्ट आते हो, जीवन के परीक्षा में भी तुमने टॉप किया है। तभी मैम बोली कल स्कूल आते वक्त तुमने बारिश में एक बूढ़ी माँ को उनके घर पहुंचाया था ना।

हां मैम उनको पहुंचाने में ही देर हो गई थी इसलिए मैं टेस्ट भी नहीं दे पाया दीपू ने बताया। तुमने जिस बूढ़ी माँ को उनके घर पहुंचाकर मदद की थी, वो मेरी माँ है। उन्होंने मुझे सब बता दिया है। बेटा ईश्वर हमारी समय-समय पर परीक्षा लेता है कि हम एक नेक इंसान हैं या नहीं? तुमने एक बूढ़ी माँ की मदद की, अपनी इंसानियत का परिचय दिया यह एक बड़ी बात है। मैम ने दीपू की पीठ थपथपाई। वह यह भी बोली चिंता मत करो, मैं प्रिंसिपल मैम से परमिशन लेकर तुम्हारा मैथ्स का टेस्ट अलग से लूंगी।

दीपू भी मैम की बात सुनकर बहुत खुश हुआ, उसे भी लग रहा था वह सचमुच जीवन की परीक्षा में पास हुआ है। सभी को इस तरह की परीक्षा में पास होना चाहिए, एक नेक इंसान बनना चाहिए।

मन की हलचल

तू खामोश नहीं है चंचल है, शांत नहीं है हलचल है।

तू वक्त के दौर से गुजरा है, तू दूढ़ रहा कुछ पलपल है।

तू जख्म समेटे रखा है, तू भूल रहा कुछ हर पल है।

तू मांग रहा उस पल को है, जो पास तुम्हारे हरपल है।

तू उस दौर को सोचा करता है, जिस दौर में रोया पल पल है।

जिस ख्वाब को देखा करता था, उस ख्वाब में अब तू हर पल है।

तू विश्वविजेता अब भी है, बस जान गया तू खुद को अब।

पहचान गया तू इस पल को, अब जीत रहा तू हर पल है।

खामोश नहीं तू इस पल में, तू विश्वविजेता हर पल है।

रणविजय

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



नन्ही किरण

एक बार की बात है, एक छोटे से गाँव में,
सपनों के सौदागर ने डेरा था जमाया।
नन्ही किरण नाम की एक बच्ची थी वहाँ,
जिसके मन में हर दिन नया सपना आया।

उसके सपनों में रंग थे, था उम्मीद का संदेश,
की एक दिन वो चाँद पे जाकर रहेगी खेल।
पर सपने जब आँखों में बादल की तरह बरसे,
रुखी धरती की तरह गाँव उस सपने को तरसे।

सूरज की लालिमा उसे हर दिन ताकत देती,
चाँद की चांदनी से उसकी कल्पनाएँ सजती।
नन्ही किरण ने तय किया, वो अपने सपने सजाएगी,
हर परीक्षा में वो अपने हौसलों का दम दिखाएगी।

श्याम घटा में छिपी बिजली की तरह वो चमकी,
सपनों की उसने धरती पर एक नई बुनियाद रखी।
बच्चों को उसने पढ़ाया, बूढ़ों को बताई कहानी,
उम्मीद की नन्ही किरण ने बदल दी गाँव की रवानी।

एक दिन तो खुद गाँव के सरपंच ने उसे पूछा,
“किरण बता, तेरी इस यात्रा का अंजाम क्या हुआ?”
किरण मुस्कुराई, और बोली अपने कोमल स्वर में,

“सपने होते हैं तो राहें भी होती हैं, सरपंच जी !”

उस गाँव में जहाँ कभी उम्मीद न थी किसी को,
नन्ही किरण बन गई उम्मीद की
नई मिसाल हर किसी को।
चाँद पे जाकर रहे या न रहे, ये अलग बात है,
पर हर छोटे सपने की शुरूआत यहीं से हो,
ये सच्ची बात है।

और इस तरह, नन्ही किरण की
कहानी गाँव में फैल गई,
हर बच्चे ने उसे सुना
और खुद के सपनों में ले गई।
कहते हैं आज भी उस गाँव में,
जब रात की चुप्पी छाप,
नन्ही किरण के सपनों की कहानी, तारों में मुस्कुराए।

मोहम्मद जाफर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी





नारी ममता की अविरल धार

नारी तुम हो ममता की अविरल धार,
तुमसे ही चलता है यह समग्र संसार।

तुम धरती पर देव स्वरूपा,
तुम हो प्रेम का आधार।
तुम्हारे आँचल का हर तार,
देता इस संसार को आकार।।

तुम हो धरा की अद्भुत मूरत,
तुम ही सृष्टि की सृजनहार।
हर रूप तुम्हारा है पूजनीय,
तुम में बसता प्रेम, दया, करुणा अपार।।

धरती उठ करे अब यही पुकार,
मत कुचलो, मत रौंदो नारी सत्कार।
जिसने किया नारी का अस्तित्व अस्वीकार।
उसका न होगा इस जीवन में उद्धार।।



संगीता साटकर
पर्यवेक्षक

अकाल मृत्यु

मृत्यु अंतिम सत्य है, उसकी और इतना आकर्षण क्यों?
संघर्ष ही तो जीवन है, जिसमें छुपी अनंत आनंद से तुम अनभिज्ञ क्यों?
जीवन में सफलता, असफलता केवल एक तात्कालिक मानदंड है।
अल्पावधि के कालखंड को अंतिम सत्य मानकर जीवन का असमय आहुति क्यों?
वृक्ष को देखो, कठिनतम समय में भी में अडग खड़ा है,
चाहे अतिवृष्टि, भीषण ग्रीष्म या हीम वर्ष में भी इस धरा पर।
तब तक, जब तक नैसर्गिक रूप से प्रकृति के गोद में ना समए यू।

मेरी यह रचना उन छात्रों के लिए समर्पित है जो किसी प्रतियोगी परीक्षा या फिर किसी कक्षा के परीक्षा में असफल होने पर विना सोच-विचार के अपने जीवन का आहुति दे देते हैं, बिना यह सोच के कि इस कृति से उनके माता-पिता पर क्या दुष्प्रभाव पड़ेगा।



राय चौधरी बस्तारिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



प्यार की तलाश



रणविजय

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

1. हर कोई घूम रहा है प्यार की तलाश में कभी इससे प्यार करता है, कभी उससे प्यार करता है और जीवन भर प्यार के लिए इधर-उधर भटकता है।
2. प्यार की दुनिया बड़ी निराली होती है प्यार की लालसा कभी खत्म नहीं होती है, जन्म से मृत्यु तक लोग प्यार की तलाश में रहते हैं।
3. ऐ खुदा ! प्यार के मामले में प्राणियों को इतना लाचार क्यों बनाया है, बंदरों की तरह उसे कभी प्यार के इस डाल पर तो कभी उस डाल पर लटकाया है।
4. इंसान ही नहीं सभी प्राणी प्यार में बैचने हैं न खुद की सुधी है, न बच्चों की सुधी है, जमाना क्या कहेगा इसकी भी नहीं बुद्धि है।
5. देवराज इन्द्र को इन्द्राणी की सुधि नहीं है वे गौतम की पत्नी अहिल्या पर मरते हैं, भगवान विष्णु को लक्ष्मी की सुधी नहीं है वे तुलसी से प्यार करते हैं।
6. नारद जी प्यार की तलाश में जीवन भर भटकते रहे, खुबसूरत दिखने के लिए बार-बार चेहरा बदलते रहे।
7. प्यार के दुश्मन भी हजार है प्यार के बाजार में हर कोई को इंतजार है, कोई उसके प्यार को हथियाना चाहता है तो कोई उसके प्यार से बतियाना चाहता है।
8. प्यार बेईमानी का धंधा है प्यार के बाजार में हर कोई अंधा है, हर कोई इस धंधे में जरूरत से ज्यादा गंदा है।
9. पहले दिन कोई किसी को बहन कहता है दूसरे दिन वह उससे प्यार करने लग जाता है, इसमें रिश्ता का खेल निराला है इसमें हर तरफ गड़बड़ झाला है।
10. ऐ खुदा ! तुम प्राणियों को कब प्यार की तलाश से मुक्ति दिलाओगे, कब धरती को प्यार के तनाव से मुक्ति दिलाओगे।

शब्दों का मान



अपने शब्दों को सर्वत्र मान,
जीवन सुन्दर बन जाता तो !
फिर कभी कविताओं का जन्म ही नहीं होता।

फिर भी,
इंसान खुद अपने दुख में डूबकर,
अपना जीवन बर्बाद करता है...
दुःख को अपने मन की दहलीज न लांघने देना,
क्या इन्सान के लिए संभव हो सकता है...
जब अधियारों मन में आशा की एक किरण
जलेगी,
तब जीवन में सर्वत्र उजियाला होगा...

फिर भी,
इंसान को देखना होगा बुद्ध का शांत चेहरा,
याद करनी होगी उसकी करुणा...
अनुभव करनी होगी उसकी निरामय शांति,
तभी जीवन के प्रश्न हल होंगे...

फिर भी,
ज्यादा सोचकर और जीवन के फटे पत्रे पलटकर,
कोई भी हल नहीं निकलेगा
जीवन के किसी भी गहन प्रश्न का...
उसके लिए,
खुद में ही ज्ञान की अग्नि जलानी होगी,
और उसमे खुद के अज्ञानता की आहुति देनी
होगी...

फिर भी,
केवल अपने ही शब्दों को सर्वत्र मान,
जीवन सुन्दर बन जाता तो !
फिर कभी कविताओं का
जन्म ही नहीं होता...

मेंडके मनोज रविन्द्र
वरिष्ठ लेखापरीक्षक





क्या टेस्ट क्रिकेट आज के आधुनिक युग में दम तोड़ रहा है

टेस्ट क्रिकेट, जिसे क्रिकेट का सबसे शुद्ध और परंपरागत रूप माना जाता है, आज के आधुनिक युग में एक गंभीर चुनौती का सामना कर रहा है। टी20 क्रिकेट के उदय और वनडे क्रिकेट के आकर्षण के बीच, टेस्ट क्रिकेट की लोकप्रियता में गिरावट देखने को मिल रही है। सवाल उठता है कि क्या टेस्ट क्रिकेट वाकई दम तोड़ रहा है, या फिर इसमें नई जान डालने की जरूरत है।

टेस्ट क्रिकेट की सबसे बड़ी विशेषता उसकी लंबाई और गहराई है। पाँच दिनों तक चलने वाले इस फॉर्मेट में खिलाड़ियों की सहनशक्ति, तकनीक और मानसिक दृढ़ता की परीक्षा होती है। लेकिन आज की तेज़-रफ्तार ज़िंदगी में दर्शकों के पास इतना समय नहीं कि वे पाँच दिनों तक क्रिकेट को देख सकें। यही कारण है कि टी20 क्रिकेट, जो केवल तीन घंटे का खेल है, अधिक लोकप्रिय हो रहा है।

उदाहरण के लिए, इंडियन प्रीमियर लीग (IPL) जैसे टूर्नामेंट ने क्रिकेट को एक नया आयाम दिया है। युवा खिलाड़ी भी अब टी20 क्रिकेट को प्राथमिकता दे रहे हैं क्योंकि इसमें तेजी से पहचान और पैसा मिलता है। दूसरी तरफ, टेस्ट क्रिकेट में कैरियर बनाने के लिए वर्षों की मेहनत और धैर्य की जरूरत होती है, जो आज के युवाओं को कम आकर्षित करता है।

हालांकि, यह कहना गलत होगा कि टेस्ट क्रिकेट पूरी तरह से दम तोड़ रहा है। कुछ देशों में अभी भी इसका गहरा महत्व है। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड में एशेज सीरीज, भारत में बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी, ये



ऐसे उदाहरण हैं जो बताते हैं कि टेस्ट क्रिकेट की महत्ता अभी भी कायम है।

लेकिन सच्चाई यह है कि टेस्ट क्रिकेट को बनाए रखने के लिए सुधार की जरूरत है। दिन-रात्रि टेस्ट और अधिक प्रतिस्पर्धी पिचों के प्रयोग जैसी चीजें इसे दर्शकों के लिए रोमांचक बना सकती हैं। टेस्ट क्रिकेट को बचाने के लिए जरूरी है कि इसके मूल्यों को बनाए रखते हुए इसे आधुनिक युग की मांग के अनुसार ढाला जाए।

जोखिम और पुरस्कार: सफलता की दिशा में

जीवन में सफलता का सफर जोखिम और पुरस्कार के साथ जुड़ा होता है। यह दोनों ही पक्ष हमारे जीवन के अनुभवों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जोखिम लेना और पुरस्कार पाना, दोनों ही विशेष योगदान करते हैं व्यक्ति के व्यक्तित्व और कैरियर के विकास में।

जीवन के हर क्षण में हमें कुछ न कुछ नया सीखने को मिलता है। कभी-कभी हमें अपनी सीमाओं को पार करने की आवश्यकता होती है, जोखिम उठाना होता है। यह जोखिम हमें नई संभावनाओं की ओर ले जाता है, जो हमने कभी सोचा भी नहीं होगा। इस प्रकार, जोखिम हमें जीवन में नयी दिशा और नई सफलताओं की ओर बढ़ाता है।

परन्तु, जोखिम उठाए बिना पुरस्कार पाना संभव नहीं होता। सफलता और पुरस्कार वहीं मिलते हैं, जहां पर हमने जोखिम उठाया हो। यदि हम किसी भी क्षेत्र में अच्छे परिणाम प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें उस क्षेत्र में जोखिम लेने के लिए तैयार रहना होगा।

जीवन के हर पल में यह सत्य है कि बिना जोखिम लिए, कुछ भी मिलना संभव नहीं होता। व्यापारिक क्षेत्र से लेकर वैज्ञानिक अनुसंधान तक, सफलता का सफर जोखिम और पुरस्कार के साथ जुड़ा होता है।

इसके अलावा, जोखिम लेना हमारी सोचने की क्षमता को भी बढ़ाता है। यह हमें सिखाता है कि कैसे हम अपने विचारों को विकसित कर सकते हैं और कैसे नए-नए विचारों को अमल में ला सकते हैं।

अतः, जीवन में जोखिम और पुरस्कार एक संतुलन हैं जो हमें सफलता की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करते हैं। हमें इन दोनों को समझने की आवश्यकता होती है और सही समय पर सही निर्णय लेना होता है। इस तरह से हम अपने जीवन में सफलता के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं।

समय प्रबंधन

समय एक ऐसा मूल्यवान संसाधन है जिसे हमें समझने और सदुपयोगी बनाने में समर्थ होना चाहिए। आजकल के समय में जहां प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है और काम की जिम्मेदारियां बढ़ गई हैं, वहां अधिकांश लोग अधिक समय तक काम करने पर मजबूर हो गए हैं। यह समस्या न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में देखने को मिलती है।

अधिक समय तक काम करना किसी भी संगठन में एक सामान्य बात हो सकती है, लेकिन यह नकारात्मक प्रभावों का कारण भी बन सकती है। यह न केवल शारीरिक तौर पर थकावट का कारण बनता है, बल्कि यह मानसिक और सामाजिक स्तर पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इसके अतिरिक्त, यह समय परिवार और व्यक्तिगत जीवन के लिए समय सीमित कर देता है, जिससे व्यक्ति के आत्मसम्मान और संतुष्टि पर भी असर पड़ सकता है।

समय प्रबंधन की बात करें तो यह एक कौशल है जिसे हर व्यक्ति को सीखना चाहिए। यदि हम अपने समय को सही तरीके से प्रबंधित नहीं कर पाते हैं, तो हम न केवल प्रदर्शन में कमी का शिकार बन सकते हैं बल्कि हमारी सेहत और व्यक्तिगत जीवन पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

समय प्रबंधन का महत्व उस स्तर तक बढ़ जाता है जब हम व्यापारिक जीवन की बात करते हैं। किसी भी संगठन में कर्मचारियों के लिए सही समय प्रबंधन का होना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वे अपना कार्य प्रभावी रूप से निष्पादित करते हैं और उनकी ऊर्जा और समर्पण दोनों ही स्तर पर बनी रहती है।

इसलिए, हमें समय प्रबंधन के महत्व को समझना और अपने काम को अधिक समय तक करने की बजाय समय को सही तरीके से प्रबंधित करना सीखना चाहिए। यदि हम समय प्रबंधन में माहिर हो जाते हैं, तो हम अपनी कार्य दक्षता में वृद्धि कर सकते हैं और साथ ही अपने व्यक्तिगत और परिवारिक जीवन को भी सुखद बना सकते हैं।



कुमार अर्जुन

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

समंदर का पानी

समंदर का पानी अगर शराब होता तो,
ठेकों पर ना लगा कतार पे कतार होता !
सड़कों पर शराबियों का तमाशा ना सरेआम होता !!
जरा सोचो समंदर का पानी अगर शराब होता,
तो ज़िंदगी कितना बा-कमाल होता !!!
समंदर का पानी अगर शराब होता तो,
मछलियों का जीवन भी कितना रंग-मिजाज होता !
उन्हे भी मरने का डर ना कल और ना आज होता !!
लहरों में भी ना इतना सैलाब होता,
सीपीयों का जीवन भी एक गहरा राज होता !!!
समंदर का पानी अगर शराब होता,
इन सबके जीवन में भी खुशियों का राग होता !!!!
जहाँ लोगों का आना-जाना कभी-कभार होता,
वहाँ परिंदों का जमावड़ा भी दिन-रात होता !
वो समंदर का किनारा ही लोगों का पहला घर-वार होता !!
जमीन की कीमतें ना यहाँ-वहाँ बेहिसाब होता !!!
ना ही घरों के दाम सातवें आसमान पर होता !!!
जरा सोचो समंदर का पानी अगर शराब होता,
तो ज़िंदगी कितना बा-कमाल होता,
ज़िंदगी कितना बा-कमाल होता !!!!



सचिन
लेखापरीक्षक

कुछ घर की यादें,
मीठी यादों का गहरा संगम
कुछ पुरानी बातें,
मीठी बातों का गहरा अंकम,
वो चादर की खुशबू,
रसोई की धूआई
अपनों का प्यार,
खुशियों की अंगड़ाई
हर दिन, हर पल एक नई कहानी,
जैसे सपनों की झील में छिपा एक धानी।
वो प्यार की झड़ियाँ वो यादों की गलियाँ,
याद आते है खेत खलिहान,
हो गयी पगडंडी सुनसान।
फुरसत में ही सही,
कुछ पल के लिए ही सही

एक बार फिर.. चाहता हूँ जीना,
फिर सी वही जिंदगी
दोस्तों की याद,
साईकल के साथ
चाय की टपली,
पकोड़े लिए हाथ।
कितना भी बसा लो नया घर,
पर याद आता है पुराना घर,
घर की यादें जैसे
पुराने प्यार के मिठास,
लय से गुंजित
अनमोल बातों के प्यास,
बहुत याद आता है
फिर से गृह निवास...।

गृहनिवास



शिव शंकर गौरी
कनिष्ठ अनुवादक



माँ



मन के सूने आँगन में,
जब होती है दस्तक
तुम्हारी मीठी यादें
होली के रंग की तरह
बिखर जाती हैं सब ओर
यूं लगता है
जीवन की अँधेरी रात में
आ गई है मीठी भोर
तुम्हारी फ़िक्र में न था चिक्क
किसी अहसान का
न मान का न अपमान का
न कोई मांग थी
न कोई जंग थी
बस एक ही उमंग थी
तुम्हें खुश कैसे रखूं
हर जरूरत-हर जरूरत
बिन मांगे पूरी करना

आँखों में बस एक सपना
तुम खुश रहो, आगे बढ़ो
इसी में है मेरी बढ़ती जिंदगी का राज
तुम मेरा कल हो तुम ही मेरा आज
ऐसी सोच किसकी हो सकती है
तुम मेरी सखी हो तुम मेरी गुरु
तुम मेरी सांसे तुम से जीवन शुरू
वो कोई और नहीं
वो सिर्फ तुम ही हो मेरी माँ माँ माँ



प्रमिला बाघ
(कु.दीक्षा बाघ-बेटी)
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



कड़वे शब्द

ना कुछ करे घाव देते हैं ये शब्द,
दिल को जख्मी करते हैं ये शब्द
सहनशीलता की भी एक सीमा होती है,
कभी-कभी आंसू को भी रुलाते हैं ये शब्द...

व्यथा कहे किसको ये पता नहीं,
जी को कितना जलाते हैं ये शब्द
यहा निःशब्द कुछ भी नहीं है,
सच्चे लफज को खामोश करते हैं ये शब्द...

भावनाओं को जला देते हैं,
आत्मा को भी कितना झंझोड़ते हैं ये शब्द
कभी अपमानित तो मन भी होता है,
कानों में शूल सा चुभते हैं ये शब्द...

भावनाओं को समझने वाला यहाँ कौन है,
भावनाओं से हमेशा खेलते हैं ये शब्द
सच्चे की कदर यहा कौन करता है,
बिना मतलब के बदनाम करते हैं ये शब्द ...

हमेशा वार पीठ पर ही होता है,
विश्वासघात भी करते हैं ये शब्द
निराश भी कब तक होगा इंसान,
सच्चे इंसान को भी नकारते हैं ये शब्द...

मेंडके मनोज रविन्द्र
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



स्कूल के वो दिन



बचपन में स्कूल का वो दौर तो याद ही होगा जब हमे हिलने की भी इजाजत न थी और मैडम किसी बच्चे को चेक की गई कॉपियाँ बांटने के लिए बुला लेती थी तो वो अजीमों-शाह-शहंशाह बन कर गरीबों में कंबल की तरह कॉपियाँ बांटता और बेचारे सब न हिलने की बाध्यता के साथ उसे कातर निगाहों से देखते रह जाते, भाई साहब, शायद आपको भी एहसास होगा की टीचर की उपस्थिति में कक्षा में चहलकदमी का क्या रुतबा होता था उन दिनों। फिर अगर बैठने की सीट को लेकर उससे खटपट हो जाए तो वो अपनी पूरी खुन्नस तब निकालता जब उसे बोर्ड पर बात करने वाले बच्चों के नाम लिखने का मैगनाकार्टा मिलना ।

मैडम के ये कहते ही कि कोई एक खाली कागज देना, क्लास की पचासों कॉपियों के पन्ने बिना कसूर ही शहीद हो जाते थे। अगर टीचर ने नाम लेकर बुला दिया और हाजिरी का रजिस्टर रखकर आने को बोला तो समझो कैबिनेट मिनिस्ट्री में चयन हो गया।

वो शिक्षक तो आपको याद ही होंगे जो आपके अनुपस्थित होने की कसर अगले दिन पूरी किया करते थे। और टीचर की टेबल के पास खड़े होकर कॉपी चेक करवाने पर डंडे कुछ इस तरह पड़ते थे जैसे किसी मजदूर को हर मिनट उसकी मजदूरी दी जा रही हो। इतिहास याद करके सुनाने के समय कभी छत की ओर देखना, कभी हांथों को झटकना जारी रहता था और ये नाटक कि उत्तर बस जुबान पर आने ही वाला है बस थोड़ा और समय दे दीजिये, बस उसी बीच ये आडंबर झेलते-झेलते शिक्षक के सब्र का बांध टूट जाता और फिर डंडे की तान पर अनारकली बना दिये जाते। अगर किसी वजह से कोई बच्चा मार खाने से बच जाता, तो सब उसे ऐसे देखते जैसे वो बच्चा पड़ोसी देश का हो।

कुछ शिक्षक तो सिर के पीछे आंखे लेकर ही पैदा हुये थे, बोर्ड पर लिखते- लिखते अचानक पलट कर चाक को भाला बना कर मारते। और भाई साहब, लिखने वाली चाक की इस तरह बरबादी देख कर बस मन करता कि इन पर देशद्रोह का केस ही कर दूँ और मैडम के उस कैबिनेट मंत्री का तो खून ही करने का मन करता जब वो जबरजस्ती अंग्रेजी का टेस्ट करवा देता और फिर जाँची हुई कॉपियों के बंडल तो डायनामाइट बनकर हमारे आराम के आशियाने को चुटकियों में उजाड़ देते।

हम सब गणित के शिक्षक को कैसे भूल सकते हैं जिनके एक दिन स्कूल न आने पर बच्चों की

खुशी का महापर्व स्वतन्त्रता दिवस मनाया जाता था। गणित का ही वो पीरियड होता था जिसमे मैडम का वो कैबिनेट मिनिस्टर और कक्षा की गरीब जनता बिल्कुल बराबर होती थी। हमे आत्मसंतुष्टि तो गणित की कक्षा में ही मिलती थी, इसलिए नहीं की हम गणित में तेज थे बल्कि इसलिए की इस बार प्रसाद सबको मिला है। प्रसाद देने के तरीके भी कई बार निराले होते थे, कभी टीचर अपनी उंगली हमारे बालों की कलम के ऊपर रखकर रगड़ देता तो कभी अपनी लिखने की कलम को हमारी उँगलियों के बीच में रखकर दबा देते पर दोनों को अंजाम एक ही होता था कि चीख हमारी ही निकलती थी।

इतना सब होने के बाद कभी-कभी भगवान को हम गरीबों पर जब तरस आता तो पहलवान (स्कूल का चपरासी) वो लाल रजिस्टर लेकर क्लास की तरफ आता दिखता, तो हम सब खुशी के मारे झूम उठते की कल छुट्टी है। आज भी याद है वो विद्या रानी की कसम कितनी अटूट होती थी हमारे लिए, कसम के बाद जान जाती है तो जाये पर कसम नहीं टूटनी चाहिए। कभी-कभी सोच कर हँसी आती है कि वो बचपन कितने डरावने माहौल में बीता लेकिन आज उन सभी शिक्षकों को नमन करने का मन करता है कि आपने जीवन को वो आधार दिया जिस पर हम आज जिंदा हैं। कोटिश: नमन आप सब को।



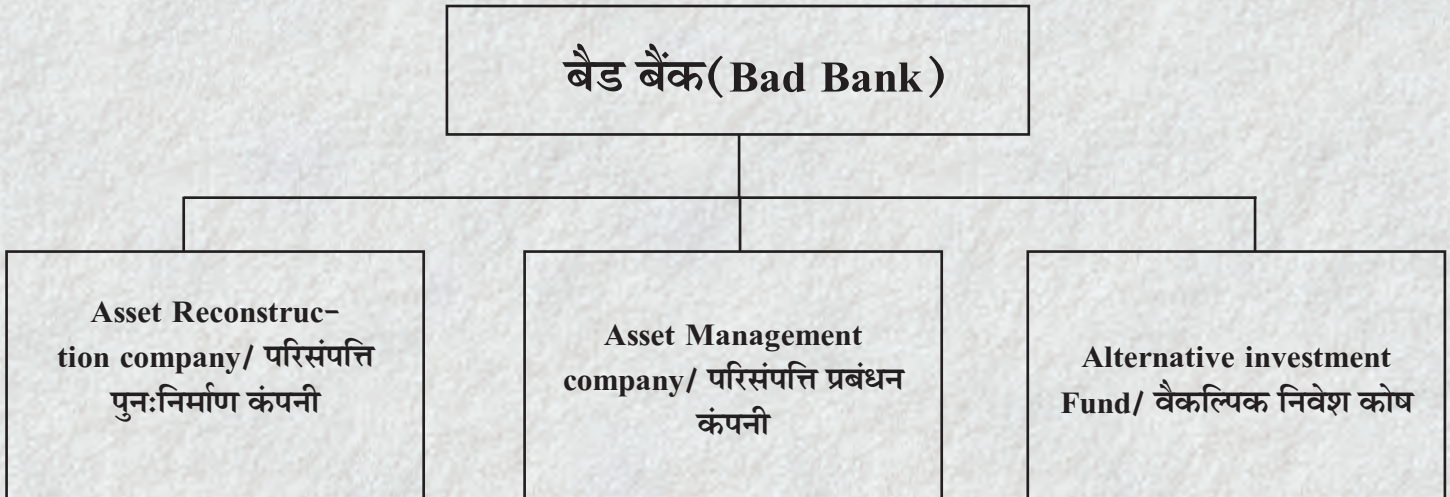
रोहित शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



बैड बैंक (Bad Bank)

लेख का शीर्षक पढ़ के ऐसा लगा होगा, मानो मैं बैंक की खराब वित्तीय व्यवस्था के बारे में बात करूँगा, पर ऐसा नहीं है। आज वर्तमान बैंकिंग क्षेत्र में बैड बैंक की अवधारणा काफी चर्चा का विषय है। यह एक विशेष प्रकार की वित्तीय संस्था है जो बैंकों से खराब ऋण को खरीदता और उन्हें पुनर्गठित करने या प्रबंधित करने का काम करता है। यह संस्था उन संपत्तियों को संभालती है जो बैंकों के लिए समस्या बन चुकी है। सन 1988 मेलोन बैंक (Mellon Bank) संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थापित विश्व का पहला बैड बैंक था।

भारत में बैड बैंक को नेशनल एसेट रिकन्स्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड (NARCL) के नाम से जाना जाता है। यह एसेट रिकन्स्ट्रक्शन कंपनी के रूप में काम करती है। सर्वप्रथम बैड बैंक की अवधारणा भारत में वर्ष 2017 में प्रस्तुत आर्थिक सर्वेक्षण में किया गया था।



- 1) परिसंपत्ति पुनःनिर्माण कंपनी :- इस कंपनी का मुख्य काम अगर सरल भाषा में समझे तो बैंकों के खराब ऋण या गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (NPA) को खरीदना है।
- 2) परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनी :- 500 करोड़ रुपए से अधिक के फंडे ऋण के लिए AMC की गठन की अवधारणा लायी गयी थी। AMC बैंकों द्वारा NPA घोषित किये हुए ऋण को खरीदता है जिससे कर्ज का भार बैंकों पर नहीं पड़ता है। यह कंपनी पूरी तरह से स्वतंत्र होगी। इसमें सरकार का कोई दखल नहीं होगा। ये अपने तरीके से परिसंपत्ति का प्रबंधन करेगा।
- 3) वैकल्पिक निवेश कोष :- परिसंपत्ति पुनःनिर्माण कंपनी को वैकल्पिक निवेश कोष के माध्यम से वित्त पोषित किया जाएगा। बैड बैंक द्वारा किये गए सुधारात्मक उपाय और पुनर्गठन प्रक्रियाएँ आर्थिक सुधार को बढ़ावा देती है। हालांकि, बैड बैंक की स्थापना और संचालन के साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी होती है, जैसा कि इन ऋण की सही प्रबंधन की जटिलता और लागत की समस्याएँ। भविष्य में इस पर कई सुधारात्मक कार्य भी किए जाए ताकि भविष्य में इसके संचालन में सुगमता लाया जा सके।



शिव शंकर गोरे
कनिष्ठ अनुवादक

सूचना स्रोत - द हिन्दू, इन्टरनेट

“रहस्य भरा बाल गीत”



छत्तीसगढ़ के गांव-गांव में पहले बच्चों को बहलाने के लिए क्षेत्रीय स्तरीय गीत गाया जाता था जो परंपरागत पीढ़ी-दर-पीढ़ी विरासत के रूप में बाल क्रिया के रूप उपयोग में लाया जाता था। इस लोकगीतों में प्राचीन परंपराओं की सीख, कोई उपदेश निहित होता था। इसी में से एक लोक प्रचलित बालगीत और उसके भावार्थ इस प्रकार है:-

अटकन बटकन दही चटाकन,
लउहा लाटा बन के काटा ।
टिपीर-टिपीर पानी गिरय
सावन में करेला फुटय।
चल चल बेटा गंगा जाबो,
गंगा ले गोदावरी जाबो।
आठ नगर पागा गुलाब सिंह राजा,
पाका-पाका बेल खाबो।
बेल के डारा टुटगे, भरे कटोरा फुटगे॥

इस बाल गीत में कितना बड़ा सन्देश छिपा है :-

1- अटकन

अर्थ - जीर्ण शरीर हुआ जीव जब भोजन उचित रूप से निगल तक नहीं पाता अटकने लगता है।

2- बटकन

अर्थ - मृत्युकाल निकट आते ही जब पुतलियाँ उलटने लगती हैं।

3-दही चटाकन

अर्थ -उसके बाद जब जीव जाने के लिए आतुर काल में होता है तो लोग कहते हैं गंगाजल पिलाओ।

4-लउहा लाटा बन के काटा

अर्थ - जब जीव मर गया तब श्मशान भूमि ले जाकर लकड़ियों से जलाना अर्थात् जल्दी जल्दी लकड़ी लाकर जलाया जाना।

6-तुहुर-तुहुर पानी गिरय

अर्थ - जल रही चिता के पास खड़े हर जीव की आँखों में आंसू होते हैं।

7-सावन में करेला फुटय

अर्थ - अश्रुपूरित होकर कपाल क्रिया कर मस्तक को फोड़ना।

8-चल चल बेटा गंगा जाबो

अर्थ - अस्थि संचय पश्चात उसे विसर्जन हेतु गंगा ले जाना।

9-गंगा ले गोदावरी जाबो

अर्थ -अस्थि विसर्जित के लिए तीर्थ यात्रा कर घर लौटना।

10-आठ नगर पागा गुलाब सिंह राजा

अर्थ - पगबंदी (पगड़ी बांधना) अन्य गांव से आने वाले पगबंदी करते हैं और आशीर्वाद देते हैं कि आज से आप इस घर के मुखिया हो या राजा हो।

11- पाका-पाका बेल खाबो

अर्थ - घर में पकवान (तेरहवीं अथवा दस गात्र में) खाना और खिलाना, धन संपत्ति बिना मेहनत के मिलना।

12-बेल के डारा टुटगे

अर्थ - हमारे परिवार के एक सदस्य कम हो गया।

13- भरे कटोरा फुटगे

अर्थ -उस जीव का इस संसार से नाता छूट गया, भरा पूरा परिवार बिखर गया।

अतः इस प्रकार हम यदि विश्लेषण करें तो उक्त लोकगीत में गीता का संदेश है, वैराग्य का उपदेश है और आधुनिकता जीवन में सफलता के मंत्र छुपे हुए है। हमारा भी कर्तव्य बनता है कि आने वाले पीढ़ी में ऐसे बालगीतों को प्रसारित करने से कभी संकोच नहीं करे।



राजेश कुमार वर्मा
सहायक पर्यवेक्षक



परिचय - विश्व विजेता 2024

ख्वाबों का एक दरिया लेके, गयी टीम लड़ने एक दंगल।
फिर से एक इतिहास बना है, वो लौटे है जिस पल।।

बीस टीमों से शुरू हुई जो, स्थान था वेस्टइंडीज और अमेरिका।
अंत में जिससे लड़कर जीता, वह टीम थी दक्षिण अफ्रीका।।

हर टीम को इसने पटखनी दी, रहे अंत तक अविजय।
हर भारतीय इन पर गर्व करता, आओ कराये इनसे परिचय।।

खूब तरसे जिस जीत के लिए, जब रहे थे भारतीय टीम के दीवार।
योद्धाओं के प्रधान यही थे, जब खत्म हुआ ट्राफी का इंतजार।।

आक्रामक है इनकी कप्तानी, और गेंदबाजो के लेते लपेटे में।
मैदान में जिसने तिरंगा गाड़ा, ऐसा दम है शर्मा जी के बेटे में।।

दुनिया के नं.-01 बल्लेबाज, जिसे कहते सब रन-मशीन।
विश्वकप के बड़े मंच पर, रहते है सदा सर्वोच्च आसीन।।

गेंदबाजी का इनका अलग अंदाज, ना टिके इनके आगे कोई लापरवाह।
है भारत का यह राष्ट्रीय खजाना, जो कर देते बल्लेबाजो को गुमराह।।

अपशब्दों के कई बाण थे झेले, फिर भी था सब मन के अंदर।
जवाब दिया मैदान में जाकर और बना मुकद्दर का सिकंदर।।

कैच नहीं वो मैच लपका था, निकाला था शेर के मुंह से निवाला।
मिस्टर 360 के अजीब करिश्में, एक कैच से पूरा मैदान हिला डाला।।

आड़े-टेढ़े सबको लिया इसने, वो जो लौटे थे मौत को छुकर।
वापसी करना कोई इनसे सीखे, ये जनाब भारत के विकेटकीपर।।

फाइनल की हो वो धमाकेदार पारी या स्टब्स को किया था जो बोल्ड।
बापू ने क्या खूब जलवा बिखेरा, जैसे जीत लिया ओलंपिक गोल्ड।।

स्विंग कराना इनकी ताकत, रखते हर बल्लेबाज को खबरदार।
टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा विकेट लेके, बने है गेंदबाजो के सरदार।।

कलाकारी इनकी उंगलियों से बिखरें, बल्लेबाज को रखे क्रीज के भीतर।
अपने फिरकियो से सबको नचाया, है चाईना मैन यह कलाई के जादूगर।।

जीत का जश्न आंसूओं से झलकी, तब भूल पाये 2023 फाइनल का हार।
कुछ शब्दों में क्या बयां करू मैं, सब ने निभायी अपनी भूमिका शानदार।।

मुम्बई का वह मरीन ड्राइव हो, या हो वानखेड़े का मैदान।
दुनिया के हर कोनो ने, दिया है विश्व विजेताओं को सम्मान।।

यह दल नहीं जिसने कप जीता, यह तो करोड़ो भारतीयों की पहचान थी।
इंतजार नहीं जो खत्म हुई थी, ये तो लौटी उन सबकी मुस्कान थी।।

हार्ड वर्क और स्मार्ट वर्क का खेल निराला

एक दिन की बात है, गांव में हुआ हंगामा,
मेहनत का पुजारी रामू और चतुराई का देवता बबलू,
हुए आमने-सामने खड़ा तमाशा।

रामू ने कस कर लंगोट, कहा मेहनत से बड़ा कुछ नहीं,
जो भी करोगे, पसीना बहा, बिना मिलेगा नहीं।

बबलू ने मुस्कराकर कहा, भाई, जरा ठहरो,
दिमाग से काम लो, समझदारी की राह पर चलो।
मैंने न हल चलाया, न खेत में पांव रखा,
फिर भी देखो, मेरी फसल कैसे
सोने-सी चमक रही है, एकदम पक्का।

रामू ने ताना मारा, कहां की ये बातें,
तू किताबों में खोया, हकीकत से है दूर, ये क्यों नहीं मानते
बबलू ने जवाब दिया, मैंने दिमाग से फसल बोई,
तेरी तरह यूं ही धूप में झुलसने से बचा, समय को मैंने संजोया।

रामू ने कहा, मेहनत ही असली पहचान है,
बिना उसके जीवन में न कोई आनंद है।
तू तो बस कंप्यूटर में घुसा रहता है,
जैसे खेतों की मिट्टी से न तेरा कोई वास्ता है।

बबलू हंसा और बोला, रामू तू नासमझी से क्यों झगड़े,
मेहनत को भी दिमाग से करना सीख ले,
समय और श्रम दोनों बचे।
मैंने एप से सीखा, मौसम का हाल जाना,
कब बोना है बीज, और कब फसल काटनी है,
सब अपने हाथ में आना।

रामू सोच में पड़ गया, ये क्या बला है भाई,
क्या सच में ये सब स्मार्ट चीजें हैं इतनी कारगर,
पर मेहनत की अपनी अलग पहचान है,
इसे छोड़कर जीना न आसान है।



बबलू ने कहा, तू सही है अपने स्थान पर,
पर सोच जरा, क्यों न करें दोनों का इस्तेमाल एक साथ,
मेहनत से मिलता है आत्म-संतोष,
और समझदारी से काम हो जाए चुटकी में,
देख ले, ये न होगा कोई धोखा।

फिर क्या था, दोनों ने मिलकर ठानी,
मेहनत और समझदारी को एक साथ लानी।
रामू ने खेत में मेहनत की,
और बबलू ने उसे स्मार्ट उपकरणों से भर दी।

अब दोनों की फसलें खूब फल-फूल रहीं,
रामू की मेहनत और बबलू की समझदारी से
दोनों की किस्मत खिल रही।
गांव वाले भी अब हंसते हुए कहने लगे,
मेहनत का संग और समझदारी का रंग,
दोनों मिलकर बनाते हैं खेत को हरे-भरे अंग।

तो भईया, यही है मेहनत और समझदारी की बात,
एक अकेले चले तो रास्ता हो मुश्किल,
पर दोनों का साथ हो तो मिल जाए सफलता का साथ।
जीवन का खेल है यह निराला,
मेहनत और समझदारी, दोनों का हो मेल,
तो सब कुछ बने मतवाला !



कुमार अर्जुन

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



भारतीय क्रिकेट टीम ने 17 साल बाद टी20 विश्व चॉपियनशिप जीती है। इस जीत ने मेरे कॉलेज के दिनों की यादें ताजा कर दी, जब मैं 20 वर्ष का युवा था। 2007 में भारत ने आखिरी बार टी20 विश्व कप जीता था, और तब मैं क्रिकेट का एक अच्छा खिलाड़ी था। इस जीत ने मुझे मैदान पर कदम रखने का उत्साह, अपने टीम के साथियों के साथ की दोस्ती और हर विकेट एवं बाउंड्री का रोमांच याद दिलाया। प्रत्येक मैच एक लड़ाई थी, न केवल विपक्षी टीम के खिलाफ बल्कि अपनी सीमाओं और भय के खिलाफ भी। हम एक ऐसे जुनून के साथ खेलते थे जो तीव्र एवं अडिग था, हमारा युवावस्था अपने महिमा के सपनों से प्रेरित था।



हालांकि मुझे कभी मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार नहीं मिला, लेकिन मैंने हमेशा अपनी टीम को जिताने के लिए पूरी ऊर्जा लगा दी। मैं एक मिडल ऑर्डर बल्लेबाज था, जिसका काम स्ट्राइक रोटेट करना था। साथ ही मैं एक ऑफ स्पिनर था, जिसका काम 1-2 विकेट लेना और विपक्षी टीम को आसानी से रन बनाने से रोकना था। मैं अपने काम में सफल था, हर मैच में कम से कम एक विकेट लेता था और मेरी इकोनॉमी रेट 5 से 6 रन प्रति ओवर होती थी। ज्यादातर समय मुझे बल्लेबाजी करने का मौका नहीं मिलता था क्योंकि मेरी टीम के साथी हार्ड हिटर थे, जो अकेले ही मैच जीत लेते थे।

तब हमारे अभ्यास सत्र बहुत कठिन होते थे। हम घंटों अपने शॉट्स को सुधारने, अपनी गेंदबाजी तकनीकों को निखारने और आगामी मैचों की रणनीति बनाने में बिताते थे। हमारे कोच एक सख्त अनुशासक थे, हमेशा हमें हमारे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रेरित करते थे। वह सख्ती में विश्वास करते थे, हम जानते थे कि यह हमारे अपने भले के लिए है। यह उनकी कठोरता ही थी जिसने हमें एक मजबूत टीम में बदल दिया।

भारतीय क्रिकेट टीम की विश्व कप की जीत अभी ताजा ही थी तभी हमारे कार्यालय के मनोरंजन क्लब ने कार्यालय में क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया। सभी अधिकारियों एवं

कर्मचारियों के अंदर उमंग जाग गई। यह समाचार सुनते ही मेरे रंगों में बिजली प्रवाहित होने लगी। तभी मेरे एक युवा सहकर्मी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं प्रतियोगिता में भाग लेना चाहूंगा। उस समय मैं अलग ही दुनिया में था, इसलिए मैंने भी उत्साहित होकर हां कह दिया। इस उत्साह के साथ, मेरा नाम भी एक टीम में शामिल कर लिया गया। टीम में युवा खिलाड़ी और कुछ वरिष्ठ अधिकारी थे, जिनमें मैं भी शामिल था।

सभी खिलाड़ियों ने मैच से पहले कम से कम कुछ अभ्यास सत्र करने का फैसला किया। मैं बहुत उत्साहित था और बिना किसी हिचकिचाहट के अभ्यास सत्र के लिए चला गया। परन्तु मैं भूल गया था कि अब मैं वह 20 वर्षीय युवा खिलाड़ी नहीं रहा, अब मैं एक 37 वर्षीय डेस्क जॉब करने वाला शासकिय कर्मचारी हूँ, एवं मेरी शारीरिक गतिविधि बहुत कम हो चुकी है। अभ्यास सत्र के लिए मैदान में पहुंचने के बाद भी मुझे अपनी उम्र का अंदाजा नहीं हुआ।

मैंने सोचा कि पहले बल्लेबाजी की कोशिश करता हूँ। मैंने बल्ला उठाया, स्ट्राइक लिया और अपने जूनियर से गेंदबाजी करने को कहा। उसने मेरी उम्र का सम्मान करते हुए धीरे-धीरे गेंदबाजी की। मैंने गेंद को डिफेंड किया और गेंद धीरे से लुढ़क गई। इससे मुझे कुछ आत्मविश्वास मिला। 2-3 गेंदों के बाद मैंने उससे पूछा कि क्या यह





उसकी सामान्य गति है। उसने मुस्कुराते हुए कहा, “नहीं सर।” मैं हैरान था और कहा, “चलो तुम्हारी सामान्य गति से कोशिश करते हैं।” उसने मुस्कुराते हुए पूछा, “क्या आप सच में ऐसा करना चाहते हैं, सर?” मैंने सिर हिलाया और कहा, “चलो कोशिश करते हैं।”

वह अपने रन-अप पर लौटा, तेजी से दौड़ा और एक तेज गेंद फेंकी, जो मेरे लिए बहुत तेज गेंदों में से एक थी। यह एक शॉर्ट पिच गेंद थी जो मेरे चेहरे के सामने उछली, मैंने गेंद को पीछे की ओर झुक कर छोड़ा, महसूस किया कि गेंद मेरे कान के पास से बुलेट की तरह गुजरी। मैं उस गति से चकित था। उसने एक और गेंद ली, और इस बार मैं गति के लिए तैयार था। यह एक अच्छी लंबाई की गेंद थी और जब मैंने बल्ला घुमाया, तो गेंद मेरे बल्ले और शरीर के बीच से गुजर कर स्टंप्स पर जा लगी। यह अविश्वसनीय था, मैंने मुस्कुराते हुए कहा, “बहुत अच्छी गेंदबाजी करते हो।”

मुझे तब महसूस हो गया कि मैं इस गति की गेंद पर बल्लेबाजी नहीं कर सकता, मैंने बल्ला एक तरफ रख दिया, स्वीकार किया कि अब मैं 20 का नहीं बल्कि 37 का हूँ। फिर मैंने अपनी गेंदबाजी कौशल आजमाने का फैसला किया। कुछ वार्म-अप के बाद, मैंने आत्मविश्वास से अपनी पहली ऑफ स्पिन गेंद फेंकी, लेकिन वह बल्लेबाज तक

नहीं पहुंची। मैं मुस्कुराया और सोचा कि यह क्या हुआ। दुबारा मैं अपने रन-अप पर पहुंचा और अपनी सारी ताकत जुटाते हुए मैंने दूसरी गेंद फेंकी। इसबार मेरी गेंद विकेटकीपर के पीछे उड़ गई। मेरे साथी खिलाड़ियों ने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन तब तक मुझे एहसास हो गया कि मैं अब गेंदबाजी भी नहीं कर सकता। मैंने फिर से कोशिश की, लेकिन गेंद शॉर्ट पिच हुई, और मेरे सहकर्मी ने बल्ला घुमाते हुए उसे छक्के के लिए भेज दिया। तब मुझे ऐसा लगा कि मैंने जल्दबाजी में फैसला लिया।

मैंने अपने युवा आत्म और वर्तमान में खुद के बीच के गहरे अंतर को महसूस किया। उम्र ने मुझे न केवल धीमा किया था बल्कि मेरी प्रतिक्रियाओं की तीव्रता को भी कम कर दिया था। मेरे जूनियर, अपनी युवावस्था की ऊर्जा और अनंत उत्साह के साथ, मैदान पर अजेय लग रहे थे। उनकी तेज चाल और ताकतवर शॉट्स और फिटनेस के आगे मैं कुछ नहीं था। मुझे जल्द ही समझ आ गया था कि मैं अपनी टीम को जिताने के काबिल नहीं हूँ। मैं केवल बाहर से उन्हें प्रोत्साहित कर सकता था। इस उम्र में क्रिकेट खेलना मेरे बस की बात नहीं थी।

इस छोटे से क्रिकेट मैदान पर बिताए समय ने मुझे कई मूल्यवान सबक सिखाए। चाहे उम्र कुछ भी हो इसने मुझे सक्रिय रहने और फिटनेस बनाए रखने के महत्व की याद दिलाई। इसने यह भी सिखाया कि हमारे जुनून का पीछा करना महत्वपूर्ण है साथ ही हमें अपनी क्षमताओं की वास्तविक समझ के साथ ऐसा करना चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण बात, इसने मुझे यह एहसास दिलाया कि खेल का हिस्सा होना जरूरी नहीं कि मैदान पर ही हो। युवा पीढ़ी को समर्थन और प्रोत्साहन देना, अनुभव साझा करना और खेल के प्रति प्यार को बढ़ावा देना उतना ही महत्वपूर्ण है। अपने सहयोगियों को इतनी उत्साह और कुशलता के साथ खेलते देखना मुझे बहुत संतोष देता है और मुझे गर्व होता है कि मैं उनकी यात्रा का हिस्सा हूँ।

अंत में, मैं टीम इंडिया को तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मेरे क्रिकेट के प्रति प्रेम को फिर से जागृत किया और एक नई पीढ़ी को खेल को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। उनकी जीत उनकी कौशल और मेहनत का प्रमाण है और मेरे जैसे अनगिनत प्रशंसकों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। भले ही मेरे खेलने के दिन अब पीछे छूट गए हों, क्रिकेट के प्रति मेरा जुनून उतना ही मजबूत है जितना पहले था। मैं भविष्य के मैचों में टीम इंडिया के लिए चीयर करने और उनकी निरंतर सफलता का जश्न मनाने के लिए तत्पर हूँ।

धन्यवाद, टीम इंडिया, खेल को आगे बढ़ाने के लिए एक और पीढ़ी को प्रेरित करने के लिए।



सी. कमलेश राव
सहायक लेखापरिचा अधिकारी



महुआ रानी

- मैं महुआ रानी हूँ, महुआ एक पेड़ का नाम है, महुआ एक फूल का नाम है, महुआ एक शराब का नाम है।
- मुझसे कलेक्टर प्यार करते हैं मुझसे तहसीलदार प्यार करते हैं, मुझसे पटवारी और कोटवार प्यार करते हैं, मुझसे पेशकार और चपरासी प्यार करते हैं।
- कोई छुपकर प्यार करते हैं? कोई मयकदा जाकर प्यार करते हैं, लेकिन जो कोई प्यार करते हैं, दिल खोलकर प्यार करते हैं, मुझसे बच्चा बूढ़ा सभी प्यार करते हैं।
- मुझसे इस जहाँ के सारे लोग प्यार करते हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ के आदिवासी मुझसे सबसे अधिक प्यार करते हैं।
- बस्तर के आदिवासी अपने नवजात शिशु को भी पिलाते हैं, जवान होने पर बस्तरिया हमेशा महुआ रानी के साथ रहते हैं।
- इसलिए मैं साल तक बस्तरिया रंगीन रहते हैं, मैं बस्तर के आदिवासियों को प्यार करती हूँ।



- मैं बस्तर के तहसीलदारों और पटवारियों को प्यार करती हूँ, इसलिए वे लोग हमेशा रंगीन रहते हैं, और दो से अधिक संगी के साथ रहते हैं।
- बस्तर के जनपद अध्यक्ष और सरपंच भी हमसे प्यार करते हैं, परन्तु जनता के डर से वे पंचायत भवन के पीछे प्यार करते हैं।
- वन-विभाग के डी.एफ.ओ. और रेंजर

भी हमसे प्यार करते हैं, डिप्टी रेंजर और फ़ौरेस्ट-गार्ड भी हमसे मिलते हैं। लेकिन मैं उनसे प्यार करने में बहुत डरती हूँ।



रणविजय

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सेवा पुस्तिका

सेवा पुस्तिका का एक जीर्ण पृष्ठ डरते हुए पलटता हूँ मैं...। इतनी सावधानी बरतने के बाद भी, उसका एक टुकड़ा मेरे हाथ में आ जाता है।

शासकीय कर्मचारी के जीवन भर की सेवा बंद रहती है, सेवा पुस्तिका में, साठ साल तक। एक कर्मचारी की उम्र की तरह, वह भी उम्रदराज हो चुकी होती है।

इन्सान की तरह,

कर्मचारी सेवा पुस्तिका



उस पर भी समय की मार पड़ती है। चरमराते पृष्ठ, घुटन सी महक, धुंधली सी पड़ी लिखावटे, नीले लाल अक्षरों के रंग में रंगे पृष्ठ। सच में मुझे डर लगता है। पृष्ठ पलटने में। इतनी सावधानी बरतने के बाद भी, उसका एक टुकड़ा मेरे हाथ में आ जाता है।

मेंडके मनोज रविन्द्र

वरिष्ठ लेखापरीक्षक



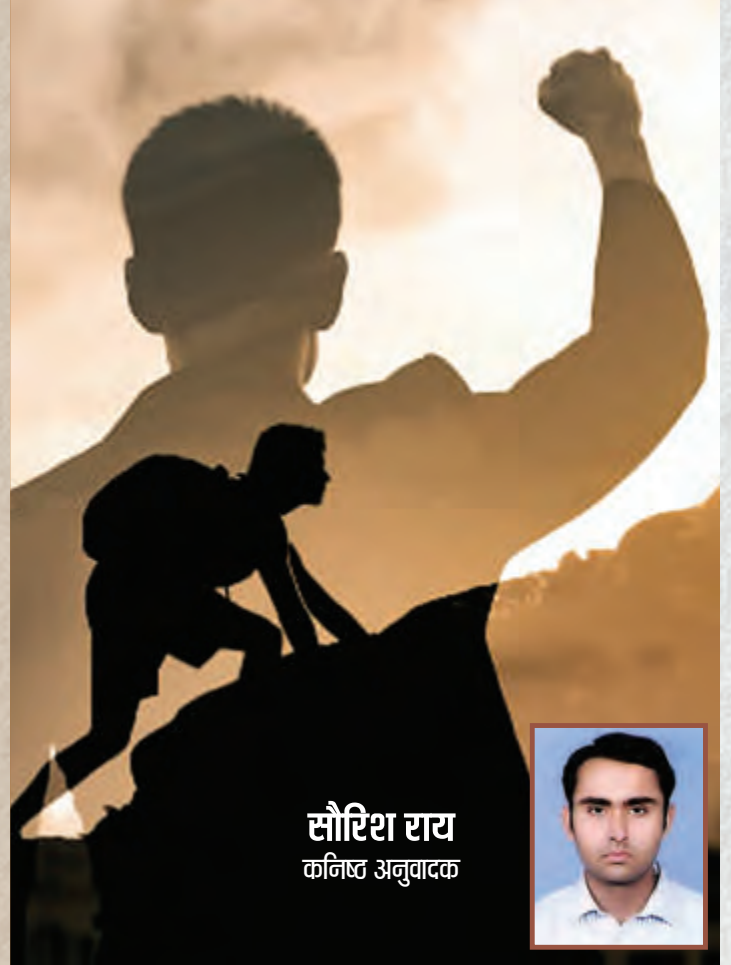
हार न मानना

जिंदगी में जब भी हो नाकामयाब,
छोड़ न देना देखना दोबारा ख़ाब।
हार मान लेने से न होता कुछ हासिल,
मेहनत से दोबारा सजाना है महफिल।

सच है कि लक्ष्य के करीब आकार भी
कई बार हिम्मत टूट जाएगी,
एक और कोशिश सारी मेहनत, बलिदान,
संघर्ष की कीमत चुकाएगी।
संघर्ष जारी रखो, यह बिना सोचे कि सफलता कब मिलेगी।
आज कठिन है, कल बढ़तर भी हो, परसो ज़रूर धूप खिलेगी।

हार मान जाने से बेहतर है कि फिर प्रयास करो,
सफलता चाहिए तो आखिरी सांस तक लड़ते रहो।
अपने मेहनत में लगाओ आज फिर इतना ज़ोर,
कि कल की सफलता दुनिया में मचा दे शोर।

याद रखना, विजय के हकदार कभी हार नहीं मानते,
और जो हार मानने वाले हैं, कभी विजेता नहीं बनते।
क्योंकि कामयाब वो नहीं होता जो कभी गिरा नहीं,
बल्कि वो बनता, जो बुरे दौर में भी हार मानता नहीं।



सौरिश राय
कनिष्ठ अनुवादक



हरियाली-अत्यंत आवश्यक

प्रभू ने दिए हमें जीने हेतु अनेक साधन,
जिसका उपयोग कर हम जीवन प्रसन्नता से बिता रहे हैं,
किन्तु हम नहीं समझ पा रहे उसका मोल,
काम का न समझ उसे नष्ट करते जा रहे हैं।

जहां कहीं हो हरा भरा वातावरण,
सबको अच्छा लगता एवं मन को मोह लेता है,
उसे बनाए रखने हेतु नहीं करते कुछ हम,
अपितु मौका मिलते ही हम उसे नष्ट कर देते हैं।
वृक्षारोपण के नाम पर फोटो खिचवाने हेतु हम,
उपस्थित होकर छोटा सा कर्म कर देते हैं,
किन्तु उसे बनाए रखने के लिए हम,
उसे सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी नहीं लेते हैं।
बढ़ता तापमान नहीं झेल पाते हैं हम,
सुविधा के लिए अनेकों साधन घर में लगवा लेते हैं,
किन्तु कब तक ऐसे बचेंगे हम,
क्यों न सही कदम हम उठा लेते हैं।
जिस हरियाली को पसन्द करते हम,
क्यों नहीं उसे सुरक्षित रखने में सहयोग देते हैं,
हमारी अगली पीढ़ी वही सिखती जो करते हैं हम,
क्यों नहीं सही कदम बढ़ाकर उन्हें प्रेरित करते हैं।



यशेन्द्र गुप्ता
सहायक पर्यवेक्षक



ज़िंदगी की पूंजी

बचपन में होमवर्क, जवानी में होम लोन,
बुढ़ापे में हम अलोन, फिर घर में बैठकर करो अनुलोम विलोम।

ज़िंदगी एक सिक्के की तरह है, सुख दुख इसके दो पहलू हैं,
हम एक पहलू में ही न खो जावें, और भूल जाएँ
कि दूसरा पहलू भी इंतज़ार कर रहा है।
वक़्त बीत जाए, तो लोग भुला देते हैं, बेवजह लोग अपनों को भी भुला देते हैं,
जो दिया रातभर रोशनी देता है, सुबह होते ही लोग उसे भी बुझा देते हैं।

मौन रहना बहुत अच्छी आदत है, लेकिन ऐसा मौन किस काम का,
जो आपके अस्तित्व को ही खत्म कर दें,
मौन आपकी ताकत भी है और आपकी कमजोरी भी।

इंसान को उसके हालात नहीं, ख्यालात परेशान करते हैं,
हालात तो वक़्त के साथ बदलते रहते हैं लेकिन
ख्यालात को बदलना आसान नहीं होता।

करेले से कड़वे लोग मुसीबत में काम आ जाते हैं,
लेकिन शक्कर से मीठे लोग वक़्त पर अक्सर धोखा दे जाते हैं।

मनुष्य के पास सबसे बड़ी पूंजी अच्छे विचार हैं,
धन और बल किसी को भी गलत राह पर ले जा सकते हैं,
किन्तु अच्छे विचार सदैव अच्छे कार्यों के लिए ही प्रेरित करेंगे।

शब्दों में धार नहीं आधार रखिए, धार वाले शब्द
मन को काटते हैं जबकि आधार वाले शब्द मन को जीत लेते हैं,
पहले लोग मरते थे और आत्मा भटकती थी, अब
आत्मा मर चुकी है और लोग भटक रहे हैं।

गोपाल राव लिमजे
परिवेशक



भारतीय ऑडिट और अकाउंट

भारत के ऑडिट और अकाउंट का रंग,
हर पल्ले में बसी, मेहनत की उमंग।
संख्याओं के संसार में, वे खोजते हर सुराग,
सच की राह पर, वे करते हैं हर दिन नया आगाज।
सत्य के प्रहरी, वे नियमों के रक्षक,
हर आंकड़े में छुपी, कहानी के साक्षी।
राष्ट्र की तरक्की में, उनका होता योगदान,
लेखा-जोखा की दुनिया में, वे बुनते हैं पहचान।
हर व्यय की जांच में, वे सत्य को तलाशते,
भ्रष्टाचार की धूंध में, ईमानदारी का दीप जलाते।
भारत के ऑडिट में, वे पारदर्शिता लाते,
न्याय की नींव पर, वे विश्वास जमाते।
राष्ट्र की संपत्ति का, वे रखते हैं हिसाब,
हर आंकड़े में छुपी, सच्चाई का वे करते हैं हिसाब।
संविधान के साये में, वे करते हैं काम,



हर आंकड़े को परखते, हर खर्च का रखते है ध्यान।
हर दस्तावेज में बसी, उनकी अनकही कहानी,
संख्याओं की जादूगारी में, वे बनते हैं मानी।
भारत के विकास में, उनका अमूल्य योगदान,
ऑडिट और अकाउंट बुनते हैं नये सपनों की उड़ान।

प्रोसेनजित दास
लेखालिपिक





सेवानिवृत्ति विदाई : एक कार्यालय अध्यक्ष की...

कहा जाता है भविष्य कभी पूर्व निर्धारित नहीं होती वह वर्तमान पर निर्भर करता है। परंतु यह अधूरा सत्य है जबकि हर चीज का भविष्य पूर्व निर्धारित होता है। कली का फूल बनना, दिन का रात होना, पानी का वाष्प बनना यह दर्शाता है कि एक मात्र परिवर्तन ही अपरिवर्तनीय है। ऐसे ही परिवर्तन की ओर एक सरकारी कर्मी बढ़ने लगता है जब वह नौकरी ज्वाइन करता है। अंततः वह दिन आ ही जाता है जब कार्यक्षमता, उत्साह, गहरा अनुभव का साथ होते हुए भी उसे अपने कर्तव्य मार्ग को छोड़ना पड़ता है जिसे शासकीय भाषा में सेवानिवृत्ति कहते हैं। सेवानिवृत्ति का अंतिम दिन एक कर्मी के लिए बहुत ही विशेष दिन होता है क्योंकि उन्हे एक ही दिन में संपूर्ण सेवाकाल का मूल्यांकन हो जाता है।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार में दिनांक 29.02.2024 को चहल-पहल पहले से कुछ ज्यादा थी। अधिकतर लोग आपस में बातचीत की शुरुआत एक ही विषय से कर रहे थे। संविदाकर्मी से लेकर बड़े अधिकारी प्रशंसा एवं शुभकामनाओं

के पूल बांध रहे थे। बाहर के कई आगंतुक भी हाथ में गुलदस्ता और दिल में शुभकामनाएं लेकर कार्यालय पहुंच रहे थे क्योंकि आज इस कार्यालय के अध्यक्ष श्री पूर्ण चंद्र माझी, प्रधान महालेखाकार (ले/हक) अपनी अधिवाषिकी की आयु पूर्ण कर सेवानिवृत्त हो रहे थे।

घर या कार्यालय की पहचान उनके मुखिया पर निर्भर करता है। श्री पी. सी. माझी ने अपने कुशल नेतृत्व और कार्यशैली से कार्यालय में कई उल्लेखनीय कार्य को संपादित किया। वे हर कार्य में पूरी तल्लीनता के साथ जुड़कर सकारात्मक ढंग से अपने अधिनस्थों को दिशा निर्देश देते थे। उनके गहन अनुभव और आत्मीयता पूर्ण सुझाव से कर्मीगण उत्साहित महसूस करते थे। श्री माझी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे कर्मियों को उनके नाम और काम से भलीभांती पहचानते थे चाहे वे कोई भी स्तर के हो। शायद यही वजह थी जिसके कारण लोग उनके पास जाने और अपनी बात रखने में सहज महसूस करते थे।

श्री माझी आज सबसे व्यक्तिगत रूप से उनके स्थान में जाकर मुलाकात कर धन्यवाद ज्ञापित कर रहे थे। वे कार्यालय को अपना दूसरा घर मानते थे इसलिए इसे हमेशा सुव्यवस्थित रखने के साथ काम को पूरी निष्ठा और तत्परता से करने

का सुझाव दे रहे थे। श्री माझी का मानना था निस्वार्थ कर्म ही सच्ची पूजा होती है और लोगो से सद्व्यवहार हमें हर क्षेत्र में उंचा उठने का अवसर देता है। आज मैंने देखा कि अभिवादन और कृतज्ञता के आदान-प्रदान में कोई लेप नहीं था। श्री माझी के साथ-साथ लोगों के आंतरिक भाव सहज ही मुख और नेत्रों से झलक रहे थे।

सायंकाल में विधिवत औपचारिक रूप से विदाई सभा का आयोजन किया गया जिसमें कई कर्मियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि कैसे श्री माझी एक कुशल नेतृत्वकर्ता के साथ व्यवहार कुशल व्यक्ति थे। श्री माझी ने अपने शुभकामनाओं संदेश में कहा कि कार्यालय में मैत्रीपूर्ण व्यवहार आपके कार्य और व्यक्तित्व को निखारने में सहयोग करता है क्योंकि अंत में जब आप विदा होते हैं तो लोग आपके व्यवहार को ज्यादा याद रखते हैं। कार्य को पूर्ण निष्ठा एवं लगन के साथ करें क्योंकि इसी वजह से आप इस जगह पर हैं। उन्होंने आगे कहा कि शासकीय सेवा एक तपस्या होती है जहां हम निजी हित से ज्यादा कर्तव्यनिष्ठा को महत्व देते हैं। उन्होंने भावुकता भरे लहजे में सबका अंतिम अभिवादन कर विदा ली। कर्मियों से पूर्णतः आच्छादित सभागार करतल ध्वनी से गुंजायमान होकर श्री माझी का अभिवादन कर रहे थे। अंत में जब ढोल नगाड़ो की ताल में कार्यालय परिसर से विदा हो रहे थे तब श्री माझी के पीछे-पीछे कार्यालय के सभी वर्गों का हुजूम चल रहा था।

एक कर्मी का अधिकांश समय उनके कार्यालय में गुजरता है। कार्यालय का वातावरण उनके परिवारिक वातावरण को प्रभावित करता है। ऐसे में यदि किसी कार्यालय में सभी वर्गों के बीच में स्वस्थ एवं मैत्रीपूर्ण माहौल है तब निश्चित रूप से उनका घरेलू परिवेश सकारात्मक होगा। इस व्यवस्था को बनाये रखने के लिए एक मुखिया की भूमिका अहम होती है और चुनौतीपूर्ण भी क्योंकि प्रेम रुपी पुष्परज्जु से अनुशासन एवं उत्पादकता को संतुलित रखना धैर्य का काम होता है वही अधिनस्थ कर्मी के सहयोग और निष्ठा के बिना कार्यालय का संचालन बंजर भूमि में फसल उगाने जितना दुष्कर होता है। श्री माझी ने दोनों स्थितियों पर सामांजस्य स्थापित करते हुए एक आदर्श भूमिका निभाने का पूरा प्रयास किया।

एक उदार व्यक्तित्व वाले श्री माझी के यादगार विदाई में कर्मियों का प्रेम एवं कृतज्ञता भी अविष्मरणीय था।



यशवंत वर्मा
हिन्दी अधिकारी



दृश्यमान दुनिया सच या भ्रम?

इस दुनिया में हम जो भी अनुभव करते हैं वह सब हम अपनी इंद्रियों की वजह से कर पाते हैं। हमारे शरीर के पंच इंद्रिय ही हमें इस दुनिया की सच्चाई से रूबरू कराती है। अपनी इंद्रियों के द्वारा हम जो भी अनुभव करते हैं वह सारी जानकारीयों विद्युतीय संकेतों के रूप में हमारे दिमाग में संधारित होती है। यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारा शरीर एक खास तरह की मशीन है, जो अपनी इंद्रियों और दिमाग के जरिए इस दुनिया की सच्चाई को अनुभव करता है। पर सवाल यह उठता है कि क्या वाकई हमारा शरीर धरती की सच्चाई को अनुभव करवाता भी है, या फिर यही दिमाग एक झूठी दुनिया को हमारे लिए सच बना कर प्रस्तुत करता है? क्या हमारी यह दुनिया एक भ्रम है? क्या हम जो सच्चाई अनुभव करते हैं, वह एक मायाजाल है?

यह कहावत तो सभी ने जरूर सुनी होगी कि आंखों देखी बात को ही सच मानना चाहिए। भले ही यही लगता होगा कि जिसे आंखें देख रही है वही सत्य है, लेकिन अब इस कहावत को थोड़ा बदलकर यह कहना चाहिए कि आंखों से दिखाई देने वाली दुनिया वास्तव में एक भ्रम है। उदाहरण के तौर पर अगर बिना किसी उपकरण के केवल आंखों से देखा जाए तो नजर आने वाले सभी मनुष्य अपने शारीरिक गठन जैसे ही दिखाई देंगे, लेकिन वही अगर एक्स-रे से, अल्ट्रावायलेट मशीन से या इनफ्रारेड से देखा जाए तो हम भी कुछ ऐसे दिखाई देंगे कि लगे कि हमारा गठन बदल गया है। ऐसा प्रतीत होगा कि हम अपने ही कई रूप देख लिए हैं, जिनको बिना किसी उपकरण के आप खुली आंखों से तो नहीं देख सकते। इसका मतलब यह हुआ कि यह निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता कि जिसे हमारी आंखें देख रही हैं वही सच है या फिर हमारा दिमाग वह दिखा रहा है जो वह दिखाना चाहता है, न कि वह जो सच्चाई है। इसे और अच्छे से ऐसे समझाया जा सकता है कि हमने वर्णमाला सीखी और उसके बाद उसका प्रयोग किताब में पढ़ने में शुरू किया, जबकि कोई अनपढ़ व्यक्ति अगर इस किताब को देखता है तो वह उसे पढ़ नहीं पाता, ऐसा क्यों होता है? जबकि हम भी इंसान है और वह भी इंसान ही है। कारण यह है कि इस संदर्भ में हमने दिमाग को इस प्रकार प्रशिक्षण दे चुके हैं कि किस रेखा का क्या अर्थ निकालना चाहिए। हम जो पढ़ रहे हैं उसकी संरचना हमारे दिमाग ने अपने अंदर बनाया हुआ है। वहीं जो पढ़ नहीं पा रहा है उसके दिमाग में ऐसी कोई संरचना नहीं बनी हुई है। अपने बनाए हुए मानदंड से ही हर किसी का दिमाग काम करता है और ठीक उसी तरह से सच्चाई को दिखाता/छुपाता है जैसे एक जादूगर हमारी आंखों को धोखा देकर हमारे सामने वास्तविकता को छुपा कर एक अनोखा दृश्य प्रस्तुत कर देता है। ऐसे में क्या इस बात की संभावना नहीं बनती कि एक बड़ा जादूगर यानि ईश्वर या कोई अद्वितीय शक्ति ही हमारी आंखों को धोखा देकर हमारे सामने एक बनावटी दुनिया की तस्वीर पेश कर रहा हो? क्या इस बात की भी संभावना नहीं बनती कि इस दुनिया में हमसे सच्चाई छुपाई जा रही हो या शायद हम एक सपना देख रहे हो, या फिर सपने में भी एक सपना?

इस बात को ऐसे समझा जा सकता है कि जब हम कोई डरावना सपना देखते हैं, नींद डर के मारे खुल जाती है क्योंकि हमने उसी सपने को सच्चाई के तौर पर महसूस किया है। ऐसा भी सुनाई देता है कि कुछ लोग नींद में चलने लगते हैं। तो क्या इसकी संभावना नहीं बनती कि हम अभी भी एक गहरी नींद



में हो और जो कुछ कर रहे हो वह भी एक सपना ही हो? अगर यह दुनिया सच होती तो जो कार्य हमें अपराध लगता है वही एक अपराधी के लिए सामान्य क्यों हो जाता है? जो बात एक को सही लगती है वहीं दूसरे व्यक्ति को गलत क्यों लगती है? जो खाना हमें स्वादिष्ट लगता है वही किसी और को बिल्कुल भी नहीं पसंद आता। सच्चाई अलग-अलग व्यक्ति के लिए कैसे बदल जाते हैं? क्यों हम अनजाने व्यक्ति का नाम और पता नहीं जान पाते? इस सब बातों का एक ही जवाब है कि जो कुछ भी हम महसूस करते हैं और देखते हैं वह दिमाग के द्वारा हमें दिखाया जा रहा है। उसकी संरचना उस विशिष्ट दिमाग में पूर्व से ही मौजूद है। ऐसे लाखों भावनाएं सभी के दिमाग में बने हुए हैं। इसकी संभावना इसलिए बनती है कि जब हम किसी रोबोट को आदेश देते हैं तो उस रोबोट को यह पता नहीं होता। तो कहीं ऐसा तो नहीं कि हम भी एक रोबोट हो और हमें भी प्रोग्राम किया गया हो? वस्तुतः हमारा दिमाग हमें वही दिखाता है जो वह चाहता है। अगर ऐसा नहीं होता तो हमें सब कुछ उल्टा ही दिखाई देता क्योंकि जो भी वस्तु या व्यक्ति आंखों के सामने है उसका प्रतिबिंब नेत्रपटल पर उल्टा बनता है और दिमाग उसे सीधा दिखाता है, तो क्या यहां आकर सच्चाई बदल नहीं जाती? दरअसल कुछ भी सच नहीं है, हमारा दिमाग सिर्फ अंदाजा लगता है और उसके आधार पर तस्वीर बनाकर हमें दिखाता है। यह इस तरह से बना हुआ है कि अगर किसी वीडियो को 'लाइव' लिख दिया जाए तो हम मान लेते हैं कि वह इस समय हो रहा है, पर क्या वाकई में यह सच है, जबकि उसे वीडियो के साथ ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी?

इसे इस प्रकार प्रयोग करके देखा जा सकता है। एक शांत कमरे में जाकर अपनी आंखें और कान पूरी तरह से बंद करके लेट जाए तो हम क्या महसूस करते हैं? हम महसूस करते हैं कि जैसी यह दुनिया दिखाई दे रही थी, अब वैसी महसूस नहीं हो रही है। क्योंकि हमें जो कुछ भी महसूस होता है या हमारा दिमाग जो कुछ भी दिखाता है वह हमारी आंखों और कान से मिली जानकारीयों के आधार पर दिखाता है। जब इन जानकारीयों के स्रोत काम नहीं कर रहे होते हैं तो दिमाग शरीर के दूसरे भाग से जानकारी इकट्ठा करके एक यथार्थरूप बना कर दिखाता है। हमें यह महसूस करवाता है कि ऐसी स्थिति में भी एक सच्चाई उपलब्ध है, जो पूर्व के समान भी हो सकती है, या अलग भी। वास्तविकता हम अब भी नहीं जान पा सकते हैं। असमंजस बरकरार रह जाती है कि क्या यह दुनिया वाकई सच है या जो कुछ भी है वह दिमाग का सिर्फ एक खेल है? बिडम्बना यह है कि जितना इस दृश्यमान दुनिया की गुत्थी सुलझाने का प्रयत्न किया जाए, उतनी ही यह उलझन जटिल सी बनती प्रतीत होती है।

सौरिश राय
कनिष्ठ अनुवादक





हादसा-बहुत दुखदाई किन्तु देता है सीख

दिनांक: 12/06/24 का वह दिन था, सायं 06:00

बजे का समय था, जब मैं अपने कार्यालय से निकल रहा था, एक हादसा प्रत्यक्ष हुआ था। एक युवक अपनी बाईक में आ रहा था, दूसरी ओर चार पहिआ वाहन जा रहा था, आंखों के सामने दोनों आपस में भिड़ गए, भयानक हादसा हुआ था। अब दोषी बोलूं तो किसको बोलूं, दोनों का वाहन तेजी में चल रहा था, किन्तु छोटी वाहन वाला ज्यादा हताहत हुआ था। हमारे कार्यालय के कर्मचारियों के साथ और भी नागरिक मदद हेतु पहुंचे थे, प्रथम जख्मी को संभालने का प्रयास फिर प्रशासन को सूचित किया गया था। पुलिस आई, किन्तु 112 को आने में देर थी,

अतः प्रशासनिक वाहन से जख्मी को अस्पताल ले जाया गया था। प्रयत्न तो किया गया, किन्तु दिनांक 13/06/24 को जख्मी मृत हो गया। छोड़ गया अपनी यादें, अपना परिवार एवं अपने पूरे करने के कर्तव्यों को। क्या बीत रही होगी उसके मां बाप पर, उसके परिवार पर, उसके बच्चों पर! सोच के मन दहल जाता है, क्या यह प्रभू का लिखा था। या हमारी गलती थी? ऐसी क्या जल्दी थी जो हमने

अपने वाहन की रफ्तार इतनी तेज रखी थी। हो सकता है कि यदि हम अपने सीमित दायरे में होते, तो इससे बच सकते थे। इतनों को दुखी, असहाय एवं विवश अपनी यादों में छोड़कर नहीं जाते।

चलो, उसको हम मान भी ले कि वह घटना होनी थी जो हो गई, किन्तु क्या हम इससे सीख ना लें कि हम सावधानी रखेंगे, ऐसी गलती से बचेंगे, निवेदन मेरा प्रशासन से भी है, लोग तो जानते हुए भी गलती करते हैं, जब तक उनके मन में भय ना हो, वे गलती करते ही रहेंगे। भय तो है मृत्यु का किन्तु कौन स्वयं को ज्यादा काबिल नहीं समझता, लगा हो रफ्तार मापक यंत्र और पहुंचे चालान, तो कौन करेगा जुरत। लगा हो गितरोधक एवं उपस्थित हों यातायात पुलिस काटने को चालान, बहुत हद तक प्रयास करेंगे रोकने की ऐसी जुरत।

यशेन्द्र गुप्ता
सहायक पर्यवेक्षक



आदत

किसी को तकलीफ देना मेरी आदत नहीं,
बिन बुलाये मेहमान बनना मेरी आदत नहीं।

मैं अपने गम में रहता हूँ, नवाबों की तरह,
परायी खुशियों के पास जाना मेरी आदत नहीं।

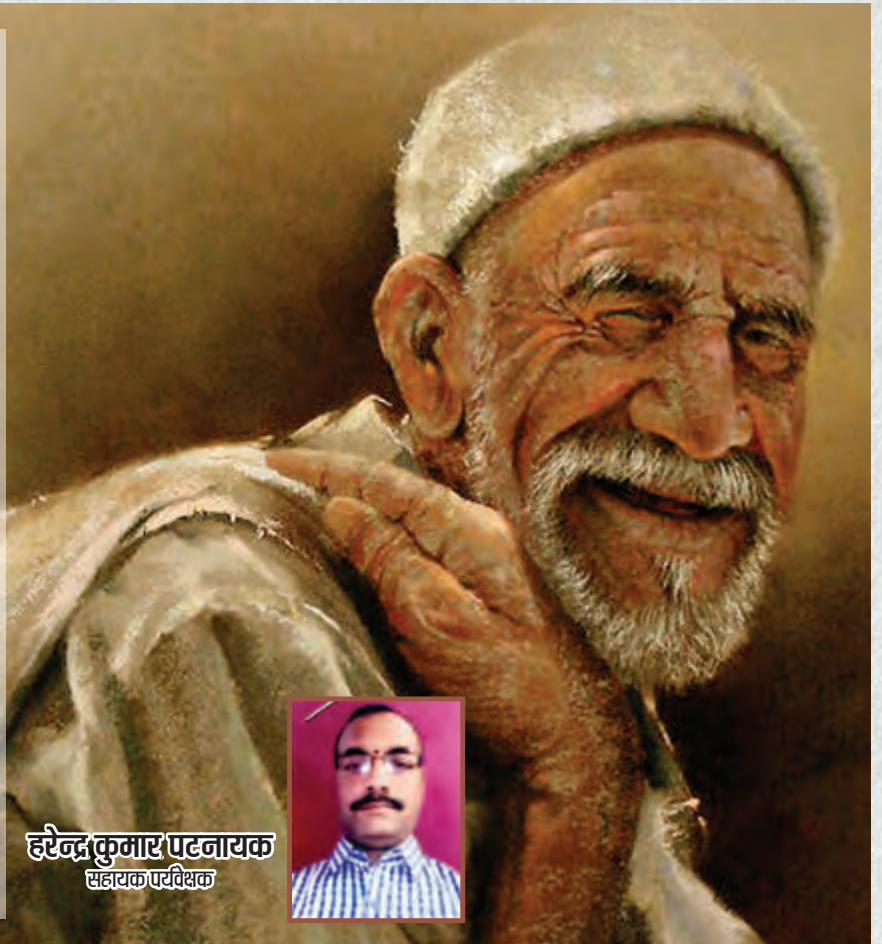
सबको हँसता हुआ ही देखना चाहता हूँ मैं,
किसी को धोखे से भी रुलाना मेरी आदत नहीं।

बांटना चाहता हूँ, बस प्यार मोहब्बत मैं,
बिन बात नफरत फैलाना मेरी आदत नहीं।

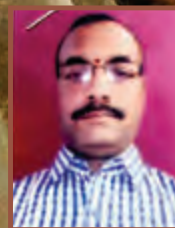
जिंदगी मिट जाए किसी की खातिर गम नहीं,
कोई बहुआ दे मरने की, यूं जीना मेरी आदत नहीं।

हरेन्द्र सबसे दोस्त की हैसियत से बोल लेता हूँ,
किसी का दिल दुखाऊँ, ये मेरी आदत नहीं।

किसी को तकलीफ देना हरेन्द्र की आदत नहीं,
बिन बुलाये मेहमान बनना मेरी आदत नहीं।



हरेन्द्र कुमार पटनायक
सहायक पर्यवेक्षक





जरूरी है

मजबूती का नकाब हटाकर
कमजोर दिखना भी जरूरी है।
सबका ख्याल दूर हटाकर कभी-कभी
खुद का ख्याल करना भी जरूरी है।
सबके सपनों को जरा सुला कर
अपने सपनों को जीना भी जरूरी है।
दुनिया कहेगी भले ही स्वार्थी तुम्हें।
मगर अपनी खुशी के लिए
कभी-कभी यह कड़वा घूट पीना भी जरूरी है।
जरूरी है रोना.. जब रोना आए।
जरूरी है गिरना.. जब मन घबराए।
जरूरी है गले लगना किसी अपने के...
जब आंसू रुक ना पाए।
जरूरी है खुद को इंसान समझना..
जो गिरता है संभलता है
और अपने लिए भी जीता है।
तुम भले ही सब कुछ संभाल लेना,
मगर थोड़ा सा वक्त
अपने आंसूओं के लिए भी निकाल लेना।



मोहमद जफर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



कहीं ना मिला गाँव

गाँव ढूँढने (खोजने) गाँव में गया, कहीं ना मिला गाँव
ना जाने कब गाँव से उखड़ा, हमारे गाँव का पाँव !
सुबह-सुबह न कोयल बोले, ना हीं काँआ करे काँव-काँव
ना रहा वो पुराना पोखर, जहां चलता था कभी नाव
ना रहा वो बूढ़ा पीपल, जहां बैठ गाँव के मुखिया सेकते थे दिनभर छाँव
खतम हो गया वो कुँआ भी, जो प्यास बुझाता था कभी गाँव दर गाँव !!
शहर की हवा आकर यहाँ, दिया सबों को ये कैसा घाव
ना जाने कब गाँव से उखड़ा, हमारे गाँव का पाँव !!!
सभी की खातिर बोझ हो गए बूढ़े माँ और बाबू जी,
रोज बहू ताना मारे और देवे हैं गाली जी,
सास-ससुर के लिए खाना बनाना, हो गया भारी जी,
चुप-चाप वहीं पे बैठा हैं बेटा, हैं ये कैसी लाचारी जी,
अपने हाथों रोपा वृक्ष भी, देता नहीं हैं छाँव !
और सड़क जब से तुम आई गाँव, रहा गाँव ना गाँव
गाँव ढूँढने (खोजने) गाँव में गया, कहीं ना मिला गाँव
ना जाने कब गाँव से उखड़ा, हमारे गाँव का पाँव !!!



सचिन
लेखापरीक्षक



बेगुनाह की सोच



गेंद एक पाले से निकली, पड़ी हैं दूसरे पाले में।
आजादी की अमर कहानी, अभी बंद हैं आले में ।
जब तक नहीं प्रभाव बढ़ेगा, खेल नहीं रच पाएगा ।
अभी समर काफी बाकी हैं, कौन कहा बच पाएगा ।
शासक रहे कभी भारत के, पर अब लूटे लुटाये हैं।
गुजरा वक्त इन्होंने उनके, छकके खूब छुड़ाए हैं।
पीढ़ी एक कुचल कर मारी, दुजी में कुछ जोश नहीं।
और तीसरी ऐसी निकली, जिसको कुछ भी होश नहीं।
कारण वही अशिक्षा वाला, सबको लेकर डूबा है।
शिक्षा पाकर नौ अगस्त को, बदल गया मंसूबा हैं।
केवल बदहाली की मत सोचो, उसे बहाना ही मानो।
चप्पे चप्पे में छा जाओ, अपनी ताकत पहचानो।
अब मासूम नहीं हैं कोई, बस उसका भ्रम जिंदा हैं।
धूर्त और बर्झमानी करके, फिर भी नहीं शर्मिदा हैं।
दुनिया ने तारीख लिखी हैं, उथल पुथल की भाषा में।
तम्बू उखड़ रहे हैं सबके, बदल रही परिभाषा में।
श्रीलंका से सबक न लेकर, फिर नादानी कर बैठे ।

हाँ हाँ ना ना करते करते, आनाकानी कर बैठे।
दो अप्रैल अठारह का दिन, सिमट गया नादानी में।
फिर से आग लगाने वाले, कूद पड़े हैं पानी में।
बाज नजर नहीं रखते हैं, लगे हुये हैं खेनी में।
नहीं समझ पाये कबीर को, साखी सबद रमैनी में।
हत्यारो की भेट चढ़ गए, लाश कहाँ खल्लास हुयी।
जिसे जोर से गया दबाया, जाति बड़ी रविदास हुयी।
मुंसिफ भी फैक रहे हैं पासा, अब अंदाज निराले में।
हो जाओ तैयार सभी अब, बरछी के संग भाले में।
गेंद एक पाले से निकली, पड़ी हैं दूसरे पाले में।
आजादी की अमर कहानी, अभी बंद हैं आले में ।

अरविन्द कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी





समय और सीमा, दोनों का ही हमारे जीवन में बहुत महत्व है। समय तो हम बचपन से सुनते आए, पढ़ते आए, अनुभव करते आए, इत्यादि, कि वह बहुत कीमती है, एक बार गया तो वापस नहीं आता है। हम यह भी जानते हैं कि कुछ भी समय से पहले नहीं होता। हम यह भी सुनते आए हैं कि समय आदमी को बदल देते हैं। समय को लेकर इस प्रकार की बहुत सी कहावतें हैं, किन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या हम इनको मानते हैं या नहीं अथवा क्या हम समय का सदुपयोग करते हैं या नहीं? उपयोग तो हम सब करते ही हैं क्योंकि प्रतिदिन हम जो करते हैं उसमें समय का उपयोग तो होता ही है, चाहे वह व्यापार हो, नौकरी हो, पढ़ाई हो अथवा कोई प्रतियोगिता की तैयारी हो, इत्यादि। हमें यह ध्यान रखना बहुत आवश्यक है कि क्या हम समय के एक-एक पल का सही उपयोग कर रहे हैं अथवा नहीं। आज अधिकतर लोग कहते हैं कि हम बहुत व्यस्त रहते हैं, हमारे पास समय ही नहीं रहता। यह तो अच्छी बात है कि आप सब व्यस्त हैं, किन्तु आपने अपने पास उपलब्ध समय का जो निवेश किया है उसका परिणाम क्या निकला, इसकी समीक्षा करना बहुत आवश्यक है।



एक व्यापारी प्रातः स्नान ध्यान कर अपनी दुकान, कार्यालय अथवा अपने कारखाने में जाकर अपना समय देते हैं और बहुत व्यस्त हो जाते हैं तो वह प्रतिदिन अथवा प्रति माह अथवा प्रति वर्ष समीक्षा करते हैं कि उन्होंने क्या क्या सेवाएं दी एवं उससे उन्हें आमदनी कितनी हो रही है, उसके ग्राहकों को संतुष्टि कितनी मिली। उसी व्यापारी के कर्मचारी, जो प्रतिदिन अपना समय निवेश कर उसके आदेशानुसार अपनी नित्य क्रियाएं करते हैं, वे भी अपने कार्य का निरीक्षण स्वयं करते हैं ताकि उसके मालिक के पूछने पर बता सकें कि वे जो वेतन पा रहे हैं उसके एवज में क्या उत्पादकता अथवा सेवाएं दे रहे हैं ताकि उसके मालिक के पूछने पर वे बता सकें कि वे जिस कार्य को करने हेतु वेतन पा रहे हैं उसे अपनी पूर्ण क्षमता से अधिक से अधिक करने का प्रयत्न कर रहे हैं। कुल

समय और सीमा के साथ व्यवहार

उत्पादकता तो हर किसी के स्वयं के सामर्थ्य पर निर्भर करती है, चाहे वो व्यापार कर रहा हो चाहे नौकरी, किन्तु दोनों को प्रतिफल अपना समय सही

रूप से निवेश करने का ही मिलता है।

मैं यहां एक उदाहरण भी आप सबको देना चाहूंगा कि एक व्यक्ति ने एक परिसर में अपना





मकान बनवा लिया और वहां अपने परिवार के साथ निवास करना प्रारंभ कर दिया। वह व्यक्ति एक छोटी सी नौकरी करके अपने परिवार का लालन पालन करता था। उस परिसर में उसे एक अच्छे से व्यापार का अवसर प्रतीत हुआ और वो वहां जमीन की दलाली करता और खरीदार के मकान बनवाने का ठेका भी लेता था। इससे वह अच्छी आमदनी प्राप्त करता रहा। उसे यह सब करने के लिए अपने किमती समय का निवेश सही रूप से करना पड़ता था। इस प्रकार समय तो हमारे लिए आवश्यक है किन्तु हम अपने समय का निवेश किस प्रकार कर रहे हैं, इस पर ध्यान देना आवश्यक है और उसका निरीक्षण करते रहना और भी आवश्यक है ताकि हम अपने किमती पलों का सही रूप से निवेश कर पाएं। यदि हम अपने उपलब्ध समय का सही रूप से उपयोग नहीं कर पाते हैं और उसे व्यर्थ गवां देते हैं तो उस अवधि में हमें कुछ भी उत्पादकता प्राप्त नहीं होगी और उस समय का हमें नुकसान सहना पड़ेगा, वो समय हमें पुनः प्राप्त नहीं होगा।

उपरोक्तानुसार जो लोग समय का सदुपयोग करते हैं, समय उनको बहुत कुछ देता है, आमदनी के अतिरिक्त अनुभव और अनेक से संबंध भी बनवाता है। मेरा मानना है कि हमें जीवन में जो किमती समय मिला है, उसका एक भी पल हम व्यर्थ न गवाएं और उससे अधिक से अधिक उत्पादकता प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहें, चाहे हम व्यापार करते हों चाहे नौकरी। नौकरी में भी यदि हम अपनी नित्य क्रियाओं में समय का सदुपयोग करें तो हम सौंपे गए कार्यों को और भी गुणवत्ता से एवं अधिक उत्पादकता देते हुए पूर्ण कर सकते हैं, जिससे स्वयं में आत्मविश्वास बढ़ता है और आंतरिक प्रसन्नता होती है।

हमें अपनी सीमा का भी निरन्तर ध्यान रखना आवश्यक है, हर क्षेत्र में हमारी कुछ सीमाएं

निर्धारित है। यदि हम व्यापार कर रहे हैं तो अनेक क्षेत्र में कुछ सीमा तक ही कार्य कर सकते हैं जो पंजीकरण में निर्धारित रहते हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई परचून की दुकान है तो वह केवल ऐसे सामान ही अपनी दुकान से बेच सकता है जो निर्धारित हैं, उसके अतिरिक्त नहीं, एक परचुनिया अपनी दुकान में दवाईयां अथवा पुस्तकें अथवा अन्य सामग्री नहीं बेच सकता जिसके लिए वह पंजीकृत नहीं है। हां, वह अपनी सीमा बढ़ा सकता है, यदि वह अन्य सामग्री भी बेचना चाहता है तो पंजीकृत करवाकर अपने क्षेत्र को बढ़ा सकता है। नौकरी में भी यही सिद्धान्त लागू होता है, आपको उतना ही कार्य करने का अधिकार होता है जितना आपके पद में निर्धारित है। यदि आप अपने कार्य का क्षेत्र बढ़ाना चाहते हैं, तो कार्य करते हुए अपनी सक्षमता अच्छी साबित करते हुए, अच्छा व्यवहार रखते हुए, निर्धारित परीक्षा में सफल होते हुए, इत्यादि, उत्तरदायित्व को बढ़ाते हुए अपने कार्यक्षेत्र को बढ़ा सकते हैं।

सीमा भी हमारे ऊपर निर्भर करती है कि हम उसे कितनी हद तक झेलने की क्षमता रखते हैं चाहे वह नौकरी हो अथवा व्यापार हो अथवा समाज कल्याण हो। हर चीज की एक सीमा होती है जो स्वयं पर निर्भर करती है कि हम उसे कितना निभा सकते हैं। अनेक लोग हैं जो अत्यधिक लगन से अपने व्यापार अथवा अपनी नौकरी में बहुत समय देते हैं, श्रम करते हैं, नयी नयी तकनीकों का उपयोग समझकर उन्हें लागू करते हैं अथवा लागू की गई तकनीकों को सुदृढ़ता से चलाने की क्षमता रखते हैं। हर किसी की सीमा भिन्न होती है, वह कितना समय अपने कार्य में दे सकते हैं, उसमें उनकी लगन कितनी है, उसे किस हद तक सूचारू रूप से चला पाते हैं अथवा उसके लिए कितना व्यवहार निभा पाते हैं, इत्यादि। उदाहरण के लिए यदि किसी में क्षमता है कि वह अपने व्यापार में अत्यधिक समय देने में सक्षम है किन्तु उसका अपने ग्राहकों से व्यवहार उत्तम नहीं है, ऐसी परिस्थिती में उसे व्यापार को सक्षमता से आगे चलाने में अनेक रूकावटें आयेंगी। जैसा मैंने ऊपर उदाहरण एक परिसर के एक व्यक्ति का दिया है जिसने वहां एक अवसर पाकर जमीन की दलाली एवं मकान बनाने के ठेके के बारे में लेख किया है, जो उस कार्य को निरन्तर करते हुए उसमें निपुण हो गया है, उसका व्यक्तिगत लोभ इतना बढ़ गया कि वह अपने ग्राहकों से एवं पड़ोसियों से अपना सही व्यवहार नहीं रख पाया जिससे उन सबसे उसका बैर बढ़ता गया। इससे उसके व्यापार में नकारात्मक प्रभाव पड़ने लगा, अंततः लोगों को उसकी जानकारी होने लगी और फिर उसे नए

कार्य का समझौता मिलना बन्द हो गया जिससे वह अत्यन्त मानसिक दबाव में रहने लगा।

अतः मेरे अनुभव से सफल व्यक्ति अपनी विशेषज्ञता का उपयोग कर समय के मोल को समझता है एवं उसका उपयोग सही रूप से एवं अपनी पूर्ण सक्षमता से करने का प्रयास करता है। इसके अतिरिक्त वह अपनी सीमा में हमेशा रहता है, उसे लांघने का प्रयत्न कभी नहीं करता चाहे वह कार्य की गतिविधि हो, अपने सुनिश्चित समय का हो, चाहे वह उसके व्यवहार का हो। जैसे कोई भी गाड़ी बिना इंजन के नहीं चलती, केवल एक पहिए से नहीं चलती, एवं भिन्न भागों को समायोजित किए बिना नहीं चलती, उसी प्रकार हमारी सफलता में भी सबका समायोजन आवश्यक है- समय का सही एवं पूर्ण क्षमता से उपयोग, अपनी सामाजिक सीमा के हद में रहना एवं दूसरों से अच्छा व्यवहार। यही हमें सफलता की ओर अग्रसर करता है।

नौकरी हेतु सीमा निर्धारित है जिसे पूर्ण करने पर सेवानिवृत्त होना पड़ता है। सेवानिवृत्ती से पूर्व ही कुछ सज्जन स्वयं को उम्रदराज मानकर स्वयं को शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर महसूस करने लगते हैं अथवा स्वयं को जीवन के बोझों से दबा हुआ महसूस करने लगते हैं। किन्तु कुछ सेवानिवृत्त कर्मचारी ऐसे भी हैं जिनका संकल्प स्वयं को पहले जैसा ही मानने को दृढ़ होता है, जो वाकई सराहनीय बात है। दूसरी ओर यदि हम व्यापारियों को दृष्टिगत करें, तो अधिकांश व्यापारी स्वयं को कभी इतना उम्रदराज मानने को तैयार नहीं होते कि वे मानसिक अथवा शारीरिक रूप से कमजोर हो गए हैं एवं वे अपने व्यापार में उपलब्ध समय का निवेश अवश्य करते रहते हैं। इसी प्रकार अनेक नौकरी वाले भी ऐसे हैं, जो सेवानिवृत्ती से पूर्व स्वयं को व्यस्त रहने के अवसर ढूढ़ ही लेते हैं, चाहे वह सामाजिक कार्य में व्यस्त रहने के अवसर हों अथवा जरूरतमंदों को शिक्षा हेतु हो अथवा कोई व्यापार हो। किन्तु कुछ भी हो, यह आवश्यक है की स्वयं को कभी कमजोर महसूस ना करें एवं स्वयं की नित्य क्रियाएं सूचारू रूप से जारी रखने में स्वयं को हमेशा सक्षम समझें। यदि हम इन कुछ सिद्धान्तों को अपनाएं, तो हमेशा स्वयं को ताजगी से भरपूर पाएंगे एवं दूसरों से हमारा व्यवहार उत्तम रहेगा।

आशा है कि हम सब उपर्युक्तानुसार दृढ़ संकल्पित होंगे।



यशेन्द्र गुप्ता
सहायक पर्यवेक्षक



प्रौद्योगिकी पर अति-निर्भरता



क्या प्रौद्योगिकी हमारे लिए वरदान है या अभिशाप? क्या यह हमारे परिवार, स्वास्थ्य और मानसिकता में दरखल दे रहा है? जैसे जीवन है, वैसे ही जीवन में आने वाली वस्तुएं हैं और उनका उपयोग। अधिकता हर चीज में, चाहे वह कितनी भी अच्छी हो हमारे लिए, बड़ा अभिशाप बन जाता है। जाने अनजाने में इस प्रौद्योगिकी के युग में हम लोगों के साथ यही हो रहा है। अगर हम समझ जाए कि हम कौन हैं, किस कार्य में हैं और उसके अनुसार एक संतुलित योजना बनाकर यह तय कर लें कि इसका इस्तेमाल हमें किस हद तक करना चाहिए, तो प्रौद्योगिकी को हम लोग वरदान में परिवर्तित कर सकते हैं।

प्रौद्योगिकी का मतलब ही है असल दुनिया से दूरी। वास्तविक दुनिया अलग है और यह बनावटी दुनिया अलग। इसके उपयोग से मानसिक तनाव, व्यग्रता आदि में इजाफा होता है, क्योंकि उपयोग करने वाला उसी को सर्वस्व मान लेता है। सोशल मीडिया पर अगर आज एक दोस्त

ने तस्वीर पे लाइक नहीं दिया है, तो व्यक्ति को लगता है कि दोस्त नाराज हैं। सच हालांकि ऐसा नहीं होता। दोस्त व्यस्त या अन्य परेशानी में भी हो सकता है। ऐसे में सवाल हमें अपने आपसे करना होगा कि हमारे लिए जरूरी क्या है? जीवन में शांति, खुशियाँ, मानसिक संतुलन ही प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं।

सबसे बड़ा असर आया है हमारे सामाजिक जीवन में। जब भी कोई सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम में हम शामिल हो अथवा किसी से सामान्य वार्तालाप भी कर रहे हों, उस वक़्त तो कम से कम प्रौद्योगिक उपकरणों से दूरी बनाकर रखना चाहिए। ऐसे में उस कार्यक्रम/संबंध से पूरा आनंद लिया जा सकता है। युवा वर्ग में सिरदर्द, चिड़चिड़ापन, आलस्यता आदि समस्याओं का एक मुख्य कारण प्रौद्योगिकी का अति-इस्तेमाल ही है। साथ ही, सारी जानकारियाँ एक क्लिक पे उपलब्ध होने के कारण लोगों का दिमाग आजकल पहले की तुलना में कम सक्रिय हो रहा है।

अतः प्रौद्योगिकी की उपयोग के दौरान यह ध्यान में रखना चाहिए कि ये हमारे व्यक्तित्व और निजी जिंदगी पर हावी न हो। उपयोग हमें प्रौद्योगिकी का करना है, न कि स्वयं उसके नक्श-ए-क्रदम पर चलना है। यह भी न भूलना चाहिए कि दुनिया में समय सबसे मूल्यवान है। अत्यधिक प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से जो समय बर्बाद होता है उसे कई बेहतर कार्यों में लगाया जा सकता है। इसलिए समय योजना के साथ-साथ यह भी तय कर लेना जरूरी है कि प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कब, किस लिए और कितना करना है। तभी मानव कल्याण में यह सहायक होगी।



सौरिश राय
कनिष्ठ अनुवादक



जिंदगी



ये दुनिया जज्बात का बाजार है
जहां दिलों के फ़साने हजार है।

सब मिलता है यहाँ, सब बिकता है यहाँ
सच झूठ, रिश्ते नाते प्यार फरेब, सब दिखता है यहाँ।



अजय मीणा
लेखापरीक्षक

न जाने कैसा अनजाना सफर है जिंदगी का
जिसकी उल्फ़त में खुद से खफा होते हैं लोग।

न जाने कौन-सी अनजानी मंजिल है, जिंदगी की
जिसके नशे में खुद को भुला देते हैं लोग।

न जाने किसने बताया उसे, न जाने किसने सिखाया उसे
जो कहता है, हंस कर जी लेने का नाम है जिंदगी।

कुछ उदास चेहरों पर मुस्कान बिखेरने का नाम है जिंदगी
लेकर तो सभी जाते हैं, कुछ लूटा जाने का नाम है जिंदगी ॥

कुछ देखो या ना देखो,
फिर भी सफर तो जारी है।

तुम चलो या कदमों को रोक लो,
फिर भी साँसों का चलना तो जारी है।

कुछ कर लो या सब कुछ छोड़ दो,
फिर भी उम्र का ढलना तो जारी है।

अगर जो तुम भी चल रहे हो खुद की क्षमताओं से परे,
तो यकीन करो, आज किसी और की तो कल तुम्हारी बारी है।

कुदरत

मिट्टी और पानी, जिससे ईश्वर ने इस धरती को भरा है।
आज हमारे लिए वही कमतर हो चला है।
अब प्राकृतिक कुछ न रहा, न खाना न पानी।
सब रासायनिक हो चला है।
हर वस्तु कीमती हो गई है।
रिश्ता भी महंगा हो चला है।
ज्ञान-विज्ञान तो बहुत तरक्की कर रहा है।
पर जीवन में सुकून दुर्लभ हो चला है।
हवायें तो भरपूर हैं धरती पर मगर,
सांस लेना दुष्कर हो चला है।
क्यों न ईश्वर ने जो जिस रूप में दिया है,
उसी रूप में रहने दे हम।
इस तरह तो जीना दुभर हो चला है।



श्रीमती लेखा उदयन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



अनुभव कहता है...



दोस्तों कई बार ऐसा होता है कि हम भले ही बड़े उत्साह के साथ कोई काम शुरू करें पर किन्हीं कारणों से कुछ समय बाद हम अपना मनोबल खो देते हैं, और वापस लक्ष्य को पाना मुश्किल लगने लगता है। हममें से सबसे अधिक अभिप्रेरित लोग भी कभी—कभी हतोत्साहित हो जाते हैं। यहाँ तक की, कभी-कभी हम इतना दुःखी महसूस करते हैं कि सकारात्मक बदलाव के बारे में सोचना भी बहुत कठिन लगने लगता है। पर ये निराशाजनक नहीं है: छोटे छोटे उपाय लेकर आप सकारात्मक बदलाव के रास्ते पर वापस आ सकते हैं। कभी कभी ये असंभव लगता है। आपको कुछ करने का मन नहीं करता। मेरे साथ भी ये हुआ है। दरअसल अभी भी समय समय पर मैं ऐसा महसूस करता हूँ। आप अकेले नहीं हैं लेकिन मैंने इस निराशा से बाहर निकलने के कुछ तरीके सीख लिए हैं, और हम आज उन्हीं पर नजर डालेंगे। जब बीमारी, चोट या जीवन में चल रही किसी और समस्या के कारण मैं व्यायाम नहीं कर पाता तो उसे वापस से शुरू करना कठिन होता है। कई बार, मैं उसके बारे में सोचना भी नहीं चाहता लेकिन मैं हमेशा उस भावना से उबरने का कोई ना कोई रास्ता निकाल लेता हूँ, और यहाँ ऐसी ही कुछ बातें हैं जो मेरे लिए मददगार साबित होती हैं।

एक लक्ष्य :-

मैंने पाया है कि अक्सर ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमारे जीवन में एक साथ बहुत कुछ चल रहा होता है। हम बहुत कुछ एक साथ एक ही वक़्त में करने की कोशिश करते हैं। यदि एक समय में दो या उससे अधिक लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास करते हैं तो आप अपनी (लक्ष्य पाने के लिए दो सबसे महत्वपूर्ण चीजें) बल और एकाग्रता बनाये नहीं रख पाते हैं।

प्रेरणा खोजिये :-

मुझे उन लोगों से प्रेरणा मिलती है जिन लोगों ने पहले ही वो लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। जो की मैं करना चाहता हूँ, या वो लोग जो वही कर रहे हैं जो मैं करना चाहता हूँ। मैं औरों के लेख और जीवनी पढ़ता हूँ, मैं अपने लक्ष्य को गूगल करता हूँ और सफलता की कहानियाँ पढ़ता हूँ।

उत्साहित होइए :-

ये सुनने में बहुत आम सी बात लगती है, पर ज्यादातर लोग इस बारे में अधिक नहीं सोचते हैं। अगर आप निराशा से निकलना चाहते हैं, तो किसी लक्ष्य के लिए उत्साहित हो जाइये पर अगर आप अपने आप को प्रेरित नहीं कर सकते तो फिर उत्साहित कैसे हो सकते हैं? इसकी शुरुआत दूसरों से प्रेरणा लेकर होती है, लेकिन आपको दूसरों से प्रेरणा लेकर उसे अपनी उर्जा में बदलना होगा मैंने पाया है कि वरिष्ठ अधिकारी/सह कर्मियों और अन्य लोगों से बात करके, इस विषय में ज्यादा से ज्यादा पढ़कर और मन में लक्ष्य निर्धारित करने से अपनी मंजिल को प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

अपेक्ष: करें:-

ये सुनने में कुछ कठिन लग सकता है लेकिन ये सचमुच काम करती है। कई बार असफल प्रयासों के बाद अगर आपको लक्ष्य प्राप्त करने की प्रेरणा मिल जाती है तो तुरंत उसे प्राप्त करने का प्रयास ना करें हममें से कई लोग उत्साहित होके आज ही अपना काम शुरू करना चाहेंगे परन्तु यह गलत है। भविष्य की कोई तारीख निर्धारित कीजिये एक या दो हफ्ते बाद और उसे अपनी आरंभ करने की तिथि बनाइये। उसे कैलेंडर पर अंकित कर लीजिये। उस तिथि को लेकर उत्साहित होइए उसे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण तिथि बना लीजिये। इस बीच योजना बनाइये क्योंकि देरी से प्रारंभ करके आप प्रत्याशा निर्मित करते हैं और अपने लक्ष्य के प्रति अपनी उर्जा और ध्यान बढ़ाते हैं।

अपना लक्ष्य प्रकाशित करें:-

अपने लक्ष्य का एक बड़ा सा प्रिंट निकाल लें कुछ ही शब्दों में लिखें और उसे अपने घर में अपने दफ्तर में दीवार पर चिपका दें। आपको अपने लक्ष्य को लेकर बड़ा अनुस्मारक लगा लेना चाहिए ताकि आप अपने लक्ष्य को केन्द्रित कर पाएं और उसे लेकर उत्साहित रह पाएं। अपने लक्ष्य से सम्बंधित कोई चित्र लगाना भी मददगार साबित हो सकता है।

सार्वजनिक रूप से प्रतिज्ञा लीजिये :-

अपना लक्ष्य प्रतिबद्ध करने की जरूरत नहीं है, पर आप इसे अपने परिवार मित्र और सहकर्मियों





को बता सकते हैं और यदि आपका कोई ब्लॉग है तो उसपर भी इस बारे में लिख सकते हैं और खुद को जिम्मेदार ठहराएँ – केवल एक बार प्रतिबद्ध मत करिए, बल्कि अपने प्रगति के बारे में सभी को हर हफ्ते या महीने अद्यतन करने के लिए भी प्रतिबद्ध करिए।

लक्ष्य के सन्दर्भ में रोज़ विचार करें:-

यदि आप रोज़ अपने लक्ष्य के बारे में सोचते हैं तो उसके पूर्ण होने की संभावना कहीं अधिक है। इसीलिए अपने लक्ष्य को दीवार पर लगाना मददगार होता है। हर रोज़ खुद को अनुस्मारक भेजना भी मददगार होता है और ये लगभग तय है की आपका लक्ष्य पूर्ण होगा। आपको उस विषय में प्रेरित करता है और आपका ध्यान केन्द्रित करने में मदद करता है। इसलिए अगर आप पढ़ सकते हैं तो रोज़ अपने लक्ष्य के बारे में पढ़िए, खासतौर से तब जब आप आत्मविश्वास खो रहे हों।

सहायता लीजिये:-

अकेले कुछ हांसिल करना कठिन होता है। वरिष्ठ अधिकारी/सहकर्मियों, परिवार और मित्रों ले मदत लेनी चाहिए, एक अच्छी समुदाय भी से भी जुड़ना चाहिए जो आपका मनोबल बढ़ाये।

इस बात को समझिये की उतार-चढ़ाव आते रहते हैं:-

प्रेरणा कोई ऐसी चीज नहीं है जो हमेशा आपके साथ रहे। ये आती है, जाती है और फिर आती है, ज्वार की तरह, इस बात को समझिये की

भले ही ये चली जाए, पर वो हमेशा के लिए नहीं चली जाती वापस आती है। बस अपने लक्ष्य से जुड़े रहिये और प्रेरणा के वापस आने का इंतज़ार कीजिये। इस दौरान अपने लक्ष्य के बारे में पढ़िए, दूसरों से मदद मांगिये।

तत्पर रहिये:-

आप चाहे जो कुछ भी करिए, पर हार नहीं मानिए। भले आप आज या इस हफ्ते बिलकुल ही प्रेरित अनुभव न कर रहे हों, पर अपना लक्ष्य छोड़िये नहीं। आपकी प्रेरणा फिर वापस आएगी अपने लक्ष्य को एक लम्बी यात्रा की तरह देखिये, और बीच में जो हतोत्साहित आता है वो महज़ एक गति बंजक है छोटी-मोटी बाधाएं आने पर यात्रा नहीं छोड़ते लम्बे समय तक अपने लक्ष्य के साथ जुड़े रहिये, उतार-चढ़ाव पार कीजिये और आप वहां पहुँच जायेंगे।

छोटे, बहुत छोटे से शुरुआत कीजिये:-

अगर आपको शुरुआत करने में दिक्कत हो रही है तो शायद इसकी वजह ये है की आप बहुत बड़ा सोच रहे हैं। यदि आप व्यायाम करना चाहते हैं, तो शायद आप सोच रहे हों की हफ्ते में पांच दिन कसरत से व्यायाम करना है। नहीं - इसकी जगह छोटे-छोटे नन्हे कदम लीजिये सिर्फ दो मिनट व्यायाम कीजिये मुझे पता है। ये आपको अटपटा लग रहा होगा ये इतना आसान है, आप असफल नहीं हो सकते पर आप इसे करिए बस कुछ व्यायाम और वहीं थोड़ी सी धीरे-धीरे चलना जब आपने एक हफ्ते तक ये 2 मिनट तक कर लेंगे, तो इसे बढ़ाकर पांच मिनट कर दीजिये, और एक हफ्ते तक इसे कीजिये। एक महीने में आप

15-20 मिनट करने लगेंगे। सुबह जल्दी उठाना चाहते हैं ? सुबह पांच बजे उठने का मत सोचिये, इसकी जगह आप एक हफ्ते तक बस 10 मिनट पहले उठिए. एक बार आपने ये कर लिया, तो 10 मिनट और जल्दी उठिए।

छोटी छोटी उपलब्धियों के साथ आगे बढ़िए:-

एक बार फिर, अगर आप एक हफ्ते तक छोटे लक्ष्य के साथ शुरू करेंगे तो आप सफल होंगे। अगर किसी बेहद आसान चीज से शुरुआत करेंगे तो आप असफल नहीं हो सकते। भला कौन दो मिनट तक व्यायाम नहीं कर सकता ? आपको अन्दर से अच्छा लगेगा। इसी भावना के साथ और छोटे-छोटे कदम लेते जाइये।

फायदों के बारे में सोचिये परेशानियों के बारे में नहीं:-

एक आम समस्या है कि हम ये सोचते हैं कि कोई चीज कितनी कठिन है। अभ्यास करना बहुत कठिन लगता है। इसके बारे में सोचना ही आपको थका देता है। पर ये सोचने के बजाये की कोई चीज कितनी कठिन है ये सोचिये की उसके कितने फायदे हैं।

नकारात्मक विचारों को त्यागिये और उन्हें सकारात्मक विचारों से बदल दीजिये:-

अपने विचारों की निगरानी करना ज़रूरी है। आप जो नकारात्मक आत्म-चर्चा करते हैं, वो दरअसल आपको हतोत्साहित कर रहा है। उसे पहचानिए कुछ दिन बस ये जानने में बिताइए कि आपके अन्दर कौन कौन से नकारात्मक विचार हैं, और फिर कुछ दिनों बाद उन्हें एक कूड़े की तरह अपने अन्दर से निकालिए और फिर उन्हें अनुरूप सकारात्मक विचार से प्रतिस्थापित कर दीजिये।



मोहम्मद जफ़र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



धर्म का बदलता स्वरूप

भारत, धर्म प्रधान एक देश है यहां धर्म के अनुरूप व्यक्तियों के क्रियाकलाप एवं व्यवहार में अंतर पाया जाता है। धर्म की उत्पत्ति इतिहास की गहरी तह में दबी हुई है। धर्म के प्रणेता अपने-अपने वैचारिक स्तर पर इनको परिभाषित कर इसे प्रसार करने का प्रयास करते हैं। आखिर धर्म है क्या? जिसकी स्थापना एवं अनुसरण से राष्ट्र की दशा और दिशा परिवर्तित हो जाती है। कहते हैं मन, क्रम एवं वचन से परहित भाव से कर्म करना धर्म है, कोई कहता है कि उस ईश्वर की उपासना करना जिनकी बदौलत हम यहां हैं, धर्म है। कोई धर्म को जाति, संप्रदाय से जोड़ कर देखते हैं तो कोई जन्म से। लेकिन यह बात तो सच है कि हर धर्म में कुछ ऐसी बात होती है जिसको अपना लें तो जीवन स्तर उंचा उठ सकता है।

धर्म के प्रचार- प्रसार के लिए आजकल समूचे भारत में जगह-जगह अनुष्ठान एवं प्रवचन आयोजित किए जा रहे हैं। छत्तीसगढ़ में भी कई जगहों में धार्मिक उत्थान हेतु कथा, प्रवचन का आयोजन जोरों पर है, जहां श्रद्धालुगण का हजूम देखकर स्वतः ही मन में धार्मिक उल्लास उमड़ने लगता है। भव्य एवं विशाल पंडाल सज्ज होकर भक्तजनों के आवभगत के लिए तैयार रहते हैं। लाखों के भीड़ में लोग परेशानियों का सामना करते हुए अपनी कोई समस्या निवारण हेतु पहुंचते हैं। कई दिनों से कथा स्थल ही श्रद्धालुओं का निज निवास बना रहता है। इस अवधि में उपकारी भक्तगण सहज ही आपके आस-पास उपदेशों पर अमल करते हुए नजर आएंगे। पर क्या ये श्रद्धा के पुंज का प्रभाव पंडाल तक ही सीमित होता है अथवा इसके बाहर भी अनुयायीगण सदैव धर्म के मार्ग में लीन रहते हैं?

इस प्रकार के वृहत स्तर के आयोजनों में लाखों-करोड़ों का व्यापार सजता है, आवागमन से लेकर दुकानों तक भीड़ ही भीड़ नजर आती है। मंदिर देवालय जहां पहले भक्तों के प्रतिक्षा में

विरान पड़े हुए थे अब वहीं पूजा-अर्चना के लिए घंटों प्रतिक्षा करनी पड़ती है। घरों में अब टी.वी. का मुख्य उपयोग कथा प्रवचन में हो रहा है। फोनों में अब निंदा की जगह कर्मकांड की चर्चा ने जगह बना ली है। शाम तक फूलों से लदने वाले पेड़ अब कली के लिए तरस रहे हैं। गली गांव से लेकर शहरों की आधुनिक कालोनियों में धर्म के क्षेत्र में यह परिवर्तन स्पष्ट नजर आ रहा है, पर क्या ये परिवर्तन पूर्णतः आंतरिक है अथवा कोई बाह्य दिखावा?

आज के समय अगर ये कहे कि धर्म का व्यावसायिकरण हो रहा है तो गलत नहीं होगा। धर्म के नाम में कई चैरिटी संस्थान फल-फूल रहे हैं। धर्म के प्रचार-प्रसार में तकनीक का प्रयोग वरदान साबित हो रहा है। मुझे आश्चर्य हुआ जब एक बार उत्तर प्रदेश के काशी में बैठे पंडित ने छत्तीसगढ़ के रायपुर में ऑनलाइन श्राद्ध कर्म संपन्न कराया। आज हम पंजीयन शुल्क का भुगतान कर घर के सोफा में बैठे-बैठे दुर्गम एवं प्रतिष्ठित देवालयों में प्रथम दर्शन का लाभ उठा सकते हैं। सोशल मिडिया में सहयोग, दान या धार्मिक वस्तु बेचने के लिए विज्ञापनों का अंबार लगा हुआ है। इसमें कौन संस्थान वैध हैं, इसकी पहचान करना मरुस्थल में ताल ढूंढने के सामान चुनौतीपूर्ण है।

एक सर्वे में पता चला कि धार्मिक प्रतिष्ठानों को प्राप्त दान से भारत के लोगों का भरण-पोषण 3 वर्षों तक किया जा सकता है। ऐसे संस्थानों का कर्तव्य बनता है कि श्रद्धाराशि के अधिकांश का उपयोग जनसेवा में लगाये और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए लेन-देन का व्यवहार सरकारी खाता के साथ करें। जिस प्रकार खरपतवार पनपते हैं कई धार्मिक/चैरिटी संस्थान भी इसी धर्म के आड़ में फल-फूल रहे हैं। दान राशि तो लेना जानते हैं परंतु सुविधाएं उपलब्ध कराने में हाथ खींच लेते हैं।

अभी वर्तमान की घटना है उत्तरप्रदेश के हाथरस में एक बाबा के आयोजन में भगदड़ होने

से करीब 120 व्यक्तियों की मारे जाने की दुखदायी खबर सुनने को मिली। तत्पश्चात छानबीन शुरु हुई जिसमें अव्यवस्था के लिए आयोजक समिति एवं पुलिस प्रशासन को जिम्मेदार माना गया। लेकिन क्या इस आरोपन से घटना के प्रभाव को कम किया जा सकता है। मेरा मानना है कि इस घटना के पश्चात जनता को भी जागरूक होने की आवश्यकता है क्योंकि श्रद्धालु कृपा पाने के लिए अपनी तथा दूसरों की सुविधाओं को ध्यान में नहीं रखते परिणामतः अबोध और आश्रित लोग शिकारग्रस्त होते हैं। धर्म की परिभाषा में पहले 'पर' को महत्व दिया जाता है, धर्म कहता है कि जब आप "अपने" लिए नहीं करते हैं तब आप वास्तव में "अपने" लिए करते हैं। कोई भी बाबा या गुरु का महत्व उनके श्रद्धालुओं से होता है, भक्तगण का प्रेम और समर्पण ही उनकी शक्ति होती है। ऐसे धर्मगुरु जनता से जितनी अधिक दूरी बनायेंगे उतनी ही जनता उनके समीप आने को लालायित होंगे।

खबर तो यह भी सच्ची है कि कई धर्मगुरु या बाबा दुराचार के आरोप में सलाखों के पीछे दिन गिन रहे हैं। धर्म के प्रचार के लिए धर्म को अंगीकार करना परम आवश्यक है। फिर भी यदि कोई धर्म प्रेरक इस मार्ग में असमर्थ होता है तो उन्हें सविनम्र जनता के समक्ष पश्चाताप कर लेना चाहिए। लेकिन एक झूठ को ढकने के लिए ऊपर झूठ के कई आवरण डालने से जनता धर्म के प्रति गुमराह हो जाते हैं।

धार्मिक अनुष्ठान से एकात्मभाव को अनुभूत करने का अवसर मिला जब रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया। राजनीति का समावेश भले ही था पर घटना ने उस अवसर पर देश में एकरस की भाव पैदा कर दी थी। समभाव जब हमारे अंदर प्रेरित होता है तब दया, प्रेम एवं सहानुभूति स्वमेव प्रवेश कर जाता है। शायद यही धर्म की परिभाषा हो।

अब देखना ये है कि क्षणिक परिवर्तन का प्रभाव व्यक्ति के अंदर कितनी देर तक बना रहता है क्योंकि धर्म, अर्थ, ज्ञान एवं मोक्ष में धर्म का स्थान जितना उच्च है उतना ही उनको धारण करना कठिन। जिस प्रकार अग्नि का प्राकृतिक गुण ताप एवं जल का शीतलता है उसी प्रकार मानव का प्राकृतिक गुणधर्म सेवा है। यदि मानव अपने मूल प्रकृति को समझ लें तो समझें वह धार्मिक हो गया।



यशवंत वर्मा
हिन्दी अधिकारी



कड़वी सच्चाईयाँ



वापस लौटना चाहता हूँ, उस दौर में,
जहाँ मित्र फोन से नहीं, आवाज़ देकर बुलाते थे।

तुम मुझसे दोस्ती का मोल न पूछना कभी,
किसने कहा कि पेड़ अपनी छांव बेचते!

नहीं छोड़ी कमी, किसी भी रिश्ते को निभाने में
आने वाले को दिल का रास्ता और
जाने वाले को रब का वास्ता नहीं दिया।

दुनिया से जाने वाले, जाने चले जाते हैं कहाँ?
कैसे ढूँढे कोई उनको, नहीं कदमों के भी निशान।
माँ की ममता और पिता की क्षमता को यदि
औलाद समझ जाए तो, यह धरती स्वर्ग भी बन सकता है।

कुछ तो बात होगी, तेरे खारेपन में ए समंदर,
वरना हर मीठी नदी, समंदर में मिलने नहीं आती

मुश्किल था, पर संभलना पड़ा, घर के वास्ते,
फिर घर से निकलना भी पड़ा, घर के वास्ते।

मजबूरियों का नाम हमने “शॉक” रख दिया,
हर शॉक को बदलना ही पड़ा, घर के वास्ते।

वक्त को कभी गलत मत कहना, भाई,
उसे हर जगह सही वक्त पर पहुँचने की आदत होती है।

हर किसी पर विश्वास कर लेना खतरनाक है,
लेकिन किसी पर भी विश्वास न करना, सबसे ज्यादा खतरनाक है।

सच को तमीज़ ही नहीं, बात करने की,
झूठ को देखो कितना मीठा बोलता है।
मर्ज भूख का था, मसला रोटी का था,
इलाज इस जहान में ढूँढा तो, किस्सा कुर्सी का था।

जब सच लिखने बोलने में परेशानी हो तो,
समझ लेना चाहिए कि हम गुलामी की तरफ बढ़ रहे हैं,
जेब में वजन हो तो, बात में भी वजन आ जाता है।
क्योंकि लोग इस दुनिया में बकवास को भी बड़े ध्यान से सुनते हैं।

दुनिया में लोगों का बहुत सीधा है परिचय,
“गुस्सा” वास्तविक होता है, जबकि “मुस्कान” में अभिनय।
“असफलता” अनाथ और “सफलता” के कई रिश्तेदार।

हरेन्द्र कुमार पटनायक
सहायक पर्यवेक्षक





प्रकृति को यूं हीं रहने दो

झरने को गिरने दो,
नदियों को बहने दो,
समन्दर से मिलने दो,
लहरों को टकराने दो,
बहते हुए पानी में
मछलियों को तैरने दो
प्रकृति को यूं हीं रहने दो।।

पंछियों को उड़ने दो,
पशुओं को कूदने दो,
पेड़ों को बढ़ने दो,
जंगल को घने होने दो,
पर्वत को खड़ा रहने दो,
आसमान को साफ रहने दो,
प्रकृति को यूं हीं रहने दो।

थोड़ी हरियाली रहने दो,
सिर्फ आवाज नहीं पर कल,
आनेवाला हर पल,
प्रकृति को यूं हीं रहने दो।।

भगदड़ की जिंदगी में
खुद को थोड़ा ठहरने दो,
जी भर के सांस लेने दो
बहता पानी, लहराती हरियाली,
खुले आसमान को
जरा देखने दो।।

पंछियों की आवाज सुनने दो,
पशुओं की करतब देखने दो,
फूलों की महक बिखरने दो,

बहते पानी में हाथ भीगने दो,
नीले आसमान को ताकने दो,
चांद तारों को गिनने दो,
प्रकृति से जुड़ने दो,

सुन्दरता का एहसास जगाओ,
धरती को दिए जख्म पर
मरहम लगाओ,
एक क्यों, ज्यादा पेड़ लगाओ
प्रकृति को और सुन्दर बनाओ
न तो यूं हीं रहने दो।।

एन. के. बिस्वाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी





कार्यालय में नवनियुक्त कर्मचारियों / अधिकारियों की सूची

No.	Name	Post	Unique ID	DOJ
1	अखिलेश मण्डल	स.ले.प. अ.	CGPRA3250647	4/5/2024
2	संदीप कुमार सामन्ता	स.ले.प. अ.	CGPRA3250655	4/10/2024
3	अभिनव कुमार	स.ले.प. अ.	CGPRA3250651	4/5/2024
4	दिनेश कुमार अग्रवाल	स.ले.प. अ.	CGPRA3250652	4/5/2024
5	मोहित गुप्ता	स.ले.प. अ.	CGPRA3250653	4/5/2024
6	सुतीक्षण कुमार	स.ले.प. अ.	CGPRA3250654	4/5/2024
7	शिवानी पतुलिया	स.ले.प. अ.	CGPRA3250656	6/6/2024
8	गौरव केशरवानी	लेखापरीक्षक	CGRPA3250560	02.08.2023
9	प्रवीण साहू	लेखापरीक्षक	CGRPA3250564	03.08.2023
10	अभिषेक कुमार सिंह	लेखापरीक्षक	CGRPA3250562	03.08.2023
11	राहुल कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250566	04.08.2023
12	विजय कुमार मीना	लेखापरीक्षक	CGRPA3250559	09.08.2023
13	आदित्य तिवारी	लेखापरीक्षक	CGRPA3250568	16.08.2023
14	नीलिमा रामटेके	लेखापरीक्षक	CGRPA3250570	18.08.2023
15	गायत्री बागरी	लेखापरीक्षक	CGRPA3250571	21.08.2023
16	आकाश रंजन	लेखापरीक्षक	CGRPA3250569	23.08.2023
17	प्रतीक तिवारी	लेखापरीक्षक	CGRPA3250575	01.09.2023
18	श्रेयस चोपड़ा	लेखापरीक्षक	CGRPA3250578	19/12/23(A/N)
19	गिरधर गोपाल	लेखापरीक्षक	CGRPA3250579	19/12/23(A/N)
20	लक्ष्य सिंह	लेखापरीक्षक	CGRPA3250580	19/12/23(A/N)
21	अनुराग आर्य	लेखापरीक्षक	CGRPA3250581	21/12/23(A/N)
22	आयुष धारवा	लेखापरीक्षक	CGRPA3250582	21/12/23(A/N)
23	विकास पाल	लेखापरीक्षक	CGRPA3250583	21/12/23(A/N)
24	श्रेया मेश्राम	लेखापरीक्षक	CGRPA3250584	21/12/23(A/N)
25	पीयूष कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250585	22/12/23 (F/N)
26	आकाश गोयल	लेखापरीक्षक	CGRPA3250586	22/12/23 (F/N)
27	उपेन्द्र साहू	लेखापरीक्षक	CGRPA3250587	22/12/23 (A/N)



28	सावन बावरा	लेखापरीक्षक	CGRPA3250588	22/12/23 (A/N)
29	अंकित कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250589	22/12/23 (A/N)
30	सुमित सिंह	लेखापरीक्षक	CGRPA3250590	22/12/23 (A/N)
31	रोहित कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250591	22/12/23 (A/N)
32	विकास कुमार सिन्हा	लेखापरीक्षक	CGRPA3250592	22/12/23 (A/N)
33	रत्नेश कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250593	22/12/23 (A/N)
34	गोपाल जी दीक्षित	लेखापरीक्षक	CGRPA3250594	22/12/23 (A/N)
35	सूरज सिंह	लेखापरीक्षक	CGRPA3250612	26/12/23 (F/N)
36	स्मिता सिंह	लेखापरीक्षक	CGRPA3250605	26/12/23 (F/N)
37	शिखर श्रीवास्तव	लेखापरीक्षक	CGRPA3250595	26/12/23 (F/N)
38	किट्टु पंडित	लेखापरीक्षक	CGRPA3250596	26/12/23 (F/N)
39	धनंजय कुमार मिश्रा	लेखापरीक्षक	CGRPA3250597	27/12/23 (A/N)
40	पुजा कुमारी	लेखापरीक्षक	CGRPA3250603	28/12/23(F/N)
41	प्रशांत कौशिक	लेखापरीक्षक	CGRPA3250598	28/12/23(F/N)
42	केशव कुमार झा	लेखापरीक्षक	CGRPA3250599	28/12/23(F/N)
43	विशाल सिंह	लेखापरीक्षक	CGRPA3250600	28/12/23(F/N)
44	शुभम	लेखापरीक्षक	CGRPA3250601	28/12/23(F/N)
45	अमन सिंह	लेखापरीक्षक	CGRPA3250620	28/12/23(F/N)
46	रंजन कुमार सिंह	लेखापरीक्षक	CGRPA3250604	28/12/23(F/N)
47	गोविंद	लेखापरीक्षक	CGRPA3250607	29/12/23 (A/N)
48	अजय मीणा	लेखापरीक्षक	CGRPA3250608	29/12/23 (A/N)
49	अभिषेक	लेखापरीक्षक	CGRPA3250606	29/12/23 (A/N)
50	समीर सिकरवार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250619	29/12/23 (A/N)
51	अभिषेक कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250617	01/01/24(F/N)
52	मंजु हेमंत	लेखापरीक्षक	CGRPA3250623	02/01/24(F/N)
53	ज्योति कुमारी	लेखापरीक्षक	CGRPA3250622	02/01/24(A/N)
54	अमन आनंद	लेखापरीक्षक	CGRPA3250628	03/01/24(F/N)
55	ईशान कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250614	03/01/24(A/N)
56	सुदामा सिंह मीणा	लेखापरीक्षक	CGRPA3250630	03/01/24(A/N)





57	लव कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250615	04/01/24(F/N)
58	जितेंद्र कुमार मीणा	लेखापरीक्षक	CGRPA3250625	08/01/24(F/N)
59	इंद्रजीत कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250624	08/01/24(A/N)
60	अभिनंदन सिंह यादव	लेखापरीक्षक	CGRPA3250616	08/01/24(A/N)
61	ऋषभ बिसेन	लेखापरीक्षक	CGRPA3250613	10/01/24(F/N)
62	साहिल कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250610	10/01/24(F/N)
63	दीपक कुमार कालिंदी	लेखापरीक्षक	CGRPA3250621	11/01/24(A/N)
64	जितेश कुमार सिंह	लेखापरीक्षक	CGRPA3250629	12/01/24(F/N)
65	प्रमोद कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250627	15/01/24(F/N)
66	रॉबिन राज	लेखापरीक्षक	CGRPA3250618	15/01/24(F/N)
67	रंजन ओझा	लेखापरीक्षक	CGRPA3250611	15/01/24(A/N)
68	सोनू कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250631	16/01/24(A/N)
69	राघोर्ते अमित योगेश्वर	लेखापरीक्षक	CGRPA3250632	25/01/24(F/N)
70	पीयूष पाण्डेय	स्टेनो ग्रेड-II	CGRPA3250626	12/01/24(A/N)
71	सोनाली मीणा	स्टेनो ग्रेड-II	CGRPA3250637	4/5/2024
72	सोनम कुशवाहा	लेखापरीक्षक	CGRPA3250634	06-03-2024(F/N)
73	दीपशिखा सिंह	लेखापरीक्षक	-	26-06-2024(A/N)
74	मेहरीन रिजा के.	लेखापरीक्षक	-	05-07-2024(A/N)

कार्यालय में पदोन्नत कर्मचारियों / अधिकारियों की सूची

No.	Name (Mr./Ms.)	Post	Unique ID	DOJ	New Post
1	के. वी. एस. एस. कामेश्वरी	स.ले.प. अ.	CGRPA3250452	1/1/2024	व.ले.प.अ.
2	देबाशीष धर	स.ले.प. अ.	CGRPA3250455	1/1/2024	व.ले.प.अ.
3	सजनी एस. अब्राहम	स.ले.प. अ.	CGRPA3250453	6/1/2024	व.ले.प.अ.
4	आकाश अम्बर	स.ले.प. अ.	CGRPA3250138	6/1/2024	व.ले.प.अ.
5	सजी	स.ले.प. अ.	CGRPA3250098	7/1/2024	व.ले.प.अ.
6	सचिन कुमार	वरि. लेखापरीक्षक	CGRPA3250296	8/23/2023	स.ले.प. अ.
7	रण विजय कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250498	8/23/2023	स.ले.प. अ.
8	प्रतीक सिंह	लेखापरीक्षक	CGRPA3250493	8/23/2023	स.ले.प. अ.
9	राहुल हल्दकार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250494	8/23/2023	स.ले.प. अ.
10	पंकज कुमार	लेखापरीक्षक	CGRPA3250501	8/23/2023	स.ले.प. अ.



11	ताज हुसैन	स.ले.प.अ.(प्रतिनियुक्ति)	CGPRA3250638	4/3/2024	स.ले.प.अ.(नियमित)
12	कुंदन कुमार	स.ले.प.अ.(प्रतिनियुक्ति)	CGPRA3250639	4/3/2024	स.ले.प.अ.(नियमित)
13	दुर्गा माधव महापात्रा	स.ले.प.अ.(प्रतिनियुक्ति)	CGPRA3250641	4/3/2024	स.ले.प.अ.(नियमित)
14	राजेश ठाकुर	स.ले.प.अ.(प्रतिनियुक्ति)	CGPRA3250642	4/3/2024	स.ले.प.अ.(नियमित)
15	शुभम प्रभात	स.ले.प.अ.(प्रतिनियुक्ति)	CGPRA3250643	4/3/2024	स.ले.प.अ.(नियमित)
16	राजन रमन वर्मा	स.ले.प.अ.(प्रतिनियुक्ति)	CGPRA3250644	4/3/2024	स.ले.प.अ.(नियमित)
17	अमित कुमार तिवारी	स.ले.प.अ.(प्रतिनियुक्ति)	CGPRA3250646	4/3/2024	स.ले.प.अ.(नियमित)
18	रजनीकान्त सिन्हा	स.ले.प.अ.(प्रतिनियुक्ति)	CGPRA3250645	4/3/2024	स.ले.प.अ.(नियमित)
19	अपूर्वा श्री	स.ले.प.अ.(प्रतिनियुक्ति)	CGPRA3250649	4/3/2024	स.ले.प.अ.(नियमित)
20	आकाश कुर्रे	स.ले.प.अ.(प्रतिनियुक्ति)	CGPRA3250648	4/3/2024	स.ले.प.अ.(नियमित)
21	रविकान्त दोनेरिया	स.ले.प.अ.(प्रतिनियुक्ति)	CGPRA3250650	4/3/2024	स.ले.प.अ.(नियमित)
22	राजू कुमार	स.ले.प.अ.(प्रतिनियुक्ति)	CGRPA3250640	4/3/2024	स.ले.प.अ.(नियमित)
23	राजेश कुमार वर्मा	वरि. लेखापरीक्षक	CGRPA3250166	1/1/2024	सहा. पर्यवेक्षक
24	कन्हैया कुमार सिंह	वरि. लेखापरीक्षक	CGRPA3250337	1/1/2024	सहा. पर्यवेक्षक
25	डी. मोहन राव	एम.टी.एस.	CGRPA3250188	12/12/2023	लेखापरीक्षक
26	शिव कुमार ध्रुव	एम.टी.एस.	CGRPA3250185	7/1/2024	लेखापरीक्षक

दिनांक 01.08.2023 से 31.07.2024 तक कार्यालय में पदोन्नति की विवरण

सरल क्रमांक	नाम	पदोन्नति पद	पदोन्नति दिनांक
1	श्री राजू लक्ष्मण लिमजे	सहायक पर्यवेक्षक	01.08.2023
2	श्री हेमंत राज	सहायक पर्यवेक्षक	01.08.2023
3	श्री मिलाऊ राम ठाकुर	पर्यवेक्षक	01.09.2023
4	श्री नारायण राव बिसेन	पर्यवेक्षक	01.09.2023
5	श्री रामनाथ मिश्रा	सहायक पर्यवेक्षक	01.09.2023
6	श्री जयधर राम	सहायक पर्यवेक्षक	01.09.2023
7	श्री शंभू बहादुर	सहायक पर्यवेक्षक	31.10.2023
8	श्री जे. जे. खेस	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2024
9	श्री अभिनव कुमार	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2024
10	श्री विजय कुमार मौर्या	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2024
11	श्री प्रवीण कुमार	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2024
12	श्री टी. शम्भा मूर्ति	लेखापाल	01.01.2024
13	श्री रविशंकर कुमार	लेखापाल	01.01.2024
14	श्री अमरेन्द्र कुमार चौरसिया	लेखापाल	01.01.2024
15	श्री शंकर बोस	लेखापाल	01.01.2024





16	श्री सुतीक्ष्ण मिश्रा	लेखापाल	01.01.2024
17	सुश्री माधुरी ध्रुव	लेखालिपिक	01.01.2024
18	श्री मंदीप	डी.ई.ओ. ग्रेड-बी	29.01.2024
19	श्री के. बी. हेडाऊ	सहायक पर्यवेक्षक	01.02.2024
20	श्री गोपी सिंह पटेल	सहायक लेखा अधिकारी	18.03.2024
21	श्रीमति सोनी कुमारी	सहायक लेखा अधिकारी	18.03.2024
22	श्री रितेश दीवान	सहायक लेखा अधिकारी	18.03.2024
23	श्री जयदेव दत्ता	सहायक लेखा अधिकारी	18.03.2024
24	श्री अभिजीत आनंद	सहायक लेखा अधिकारी	18.03.2024
25	श्री अबरार अहमद अंसारी	सहायक लेखा अधिकारी	18.03.2024
26	श्री नितीश कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	18.03.2024
27	श्री एम. बी. मनोज	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	22.03.2024
29	श्री डी. यू. पराते	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	22.03.2024
30	श्री सुनील कुमार बघेल	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	22.03.2024
31	श्रीमति सुनीता कुरूप	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	22.03.2024
32	श्रीमति उषा मनोज	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	22.03.2024
33	श्री सी. संतोष	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	22.03.2024
34	श्री संदीप मुखर्जी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	22.03.2024
35	श्रीमति लेखा एस. कुमार	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	22.03.2024
36	श्री के. एस. कल्याणराम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	22.03.2024
37	श्री हेमंत के. बी. अलोने	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	22.03.2024
38	श्री जी. सजीत कुमार	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	22.03.2024
39	श्री के. पी. संतोष	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	22.03.2024
40	श्री कमल सिंह कश्यप	पर्यवेक्षक	01.04.2024
41	श्री रणजीत कुमार	लेखापाल	29.05.2024
42	श्री इंद्रजीत कुमार	लेखापाल	29.05.2024
43	श्री राजेश कुमार	लेखापाल	29.05.2024
44	श्री शशि प्रताप वर्मा	लेखापाल	29.05.2024
45	श्री सचिन नारा	लेखापाल	29.05.2024
46	श्री गिरधारी लाल वासनिक	पर्यवेक्षक	01.06.2024
47	श्री बी. मोहन कुमार	वरिष्ठ निजी सचिव	01.06.2024
48	श्रीमति विमल वासनिक	सहायक पर्यवेक्षक	01.06.2024
49	श्री मंदीप कुमार	लेखापाल	04.06.2024
50	श्री राकेश कुमार	लेखापाल	07.06.2024
51	श्री प्रवीण कुमार	डी.ई.ओ. ग्रेड-बी	27.06.2024
52	श्री रवि प्रकाश	डी.ई.ओ. ग्रेड-बी	27.06.2024



53	श्री भूपेंद्र	डी.ई.ओ. ग्रेड-बी	27.06.2024
54	श्री मंजीत	डी.ई.ओ. ग्रेड-बी	27.06.2024
55	श्री भीमराव सोमाजी बांदेकर	पर्यवेक्षक	01.07.2024
56	श्री महेंद्र प्रसाद	सहायक पर्यवेक्षक	01.07.2024
57	श्रीमति बसंती नेतम	कल्याण सहायक	08.07.2024

दिनांक 01.08.2023 से 31.07.2024 तक कार्यालय में सेवानिवृत्ति की विवरण

सरल क्रमांक	नाम	सेवानिवृत्ति पद	सेवानिवृत्ति दिनांक
1	श्री योगेश कुमार सूद	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.08.2023
2	श्री सदाराम कश्यप	पर्यवेक्षक	31.08.2023
3	श्री राजकुमार भूआर्य	पर्यवेक्षक	31.08.2023
4	श्री बी. एन. वर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	29.09.2023
5	श्री के. बी. सुनील कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	31.10.2023
6	श्री वाय. वसुदेव राव	वरिष्ठ लेखापाल	31.10.2023
7	श्री हारून रशीद	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.11.2023
8	श्री बी. व्ही. व्ही. गोपाल राव	सहायक लेखा अधिकारी	31.01.2024
9	सुश्री शिबानी पाल	सहायक पर्यवेक्षक	31.01.2024
10	श्री राजू लक्ष्मण राव लिमजे	पर्यवेक्षक	31.03.2024
11	श्री एम. जे. घोड़ेश्वर	पर्यवेक्षक	31.05.2024
12	श्री रोहित कुमार वर्मा	वरिष्ठ निजी सचिव	31.05.2024
13	श्री वाय. जवाहर	पर्यवेक्षक	30.06.2024
14	श्री डी. यू. पराते	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2024
15	श्री सुनील कुमार बघेल	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2024

दिनांक 01.08.2023 से 31.07.2024 तक कार्यालय में मृत्यु की विवरण

सरल क्रमांक	नाम	मृत्यु पद	मृत्यु दिनांक
1	श्री तिहरु राम उराव	एम.टी.एस.	31.01.2024
2	श्री विजय कुमार भालाधरे	एस.आर. ए.ओ.	11.06.2024
3	श्री हेमलाल	लेखापाल	11.06.2024

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन)





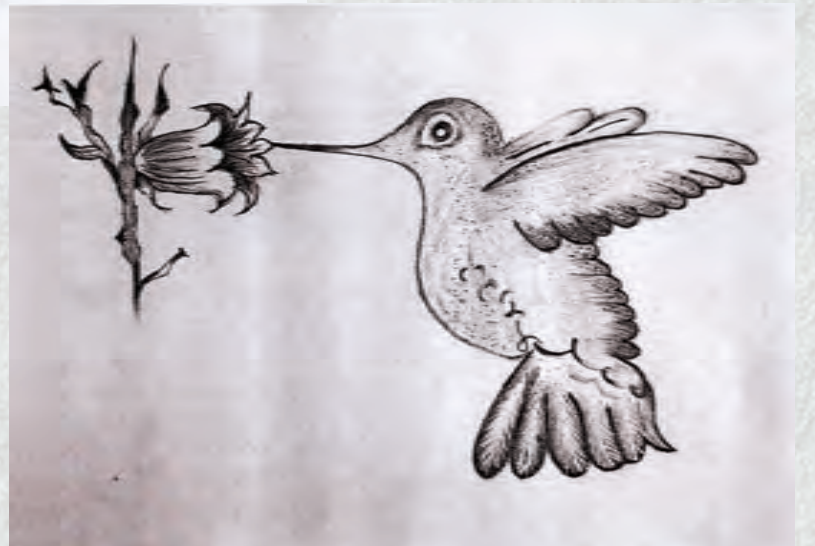
दिव्या साहू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सुपुरी - लुभावनी
आयु - 10 वर्ष



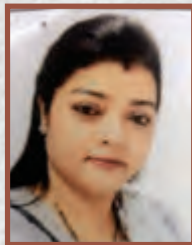


दिव्या साहू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सुपुत्री - लुभावनी
आयु - 10 वर्ष





संगीता साठकर
परिचयक





संगीता साटकर
पर्यवेक्षक





आस्था का गढ़...

छत्तीसगढ़



स्वत्वाधिकार एवं प्रकाशन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़-रायपुर

| मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा